नाम –

जन्म तिथि–

जन्म स्थान –

नक्षत्र –उत्तराभाद्रपद, चरण –प्रथम

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र फल –

जातिका का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। जातिका प्रसनचित एवं दृढ़निश्चयी होंगी । जातिका भावुक और सोच–समझ कर कार्य करने वाली होंगी। जातिका की अपनी एक अलग विचारधारा होगी। दैनिक कार्यों में थोड़ी आलसी हो सकती है। सभी के साथ व्यवहार अनुकूल होगा। आप मन से स्वच्छ एवं निर्मल है सभी आपको स्नेह करेंगे आप एक ही समय में कई विषयों में दक्षता हासिल कर सकती है। आप यथार्थ और सच में भरोसा रखती है। आप भविष्य मेहनत करने से कभी पीछे नहीं हटेंगी ।

राशि फल – जन्म के समय चन्द्रमा जिस राशि में होता है, वही जातक के जन्म की राशि कहलाती है। आपकी जन्म राशि मीन है।

मीन – मीन राशि नवम स्थान में स्थित है एवं उसके उपर शनि की दृष्टि है।

बुद्धिमान, व्यवहार में सौम्य, साहसी एवं उत्साह से भरपूर होंगी। किसी भी विषय वास्तु को सूक्ष्मता, समझदारी एवं गहराई से समझना चाहेंगी। जातिका उदार एवं आशावादी होंगी। जातिका गहन अध्ययन में रूचि रखती है। आपके स्वाभाव में किसी भी कार्य को धैर्य एवं समझदारी से पूरा का सामर्थ्य है। आपके अंदर लोगो को सँभालने की कला है। लोगो के मन की बात जानकर उसे परिस्थितियों के अनुसार संभालना और सलाह देना आपके अंदर होगा। जातिका निरंतर उन्नत्ति की ओर सदैव अग्रसर रहेंगी एवं राजकीय जीवन शैली एवं दूसरों के उपर नेतृत्व करने का सामर्थ्य रखती हैं । आप संवेदनशील और दूर की सोच रखने वाली है। आप निर्णय लेने में कभी–कभी दुविधा में होती है। आप सभी के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखना चाहती है। आप अनुशासित और एक व्यवस्था को पसंद करने वाली है। माता–पिता एवं अपने से बड़ों का देख–भाल करने वाली होंगी एवं आदर एवं सम्मान भी करेंगी ।

लग्न राशि कर्क का फल –

लग्न में कर्क राशि है इसके स्वामी चन्द्रमा नवम भाव में मीन राशि में स्थित है। यहां लग्न के उपर गुरु की पंचम दृष्टि है। लग्नेश चन्द्रमा नवम स्थान में स्थित है और शुक्र, मंगल, बुध गुरु के साथ है और शनि की दृष्टि है। लग्न के कारक ग्रह सूर्य लग्न पत्रिका में दसम स्थान में उच्च का स्थित है ।

नवांश पत्रिका में चन्द्रमा कन्या राशि में दशम स्थान में स्थित है।

जातिका भावुक, सरल, समझदार एवं मजबूत इच्छाशक्ति वाली है। आप हमेशा हर परिस्तिथि में दूसरो की मदद के लिये अग्रसर रहती है। आपके विचार परिवर्तनशील होंगे, कभी –कभी आप दुविधा में रहेंगी । आप एक अच्छी सलाहकार के रूप में उभरकर सामने आएंगी। सौम्यता साथ–साथ चंचलता भी आपके व्यवहार में होगी। आप अपनी हिम्मत से हमेशा आगे बढ़ती रहेंगी और आप बुलंदी छूने की चाह रखती है। कभी–कभी मन परेशान हो सकता है। आप कला के क्षेत्र में भी रूचि लेती है। आपको सर्दी–जुकाम से सम्बंधित परेशानी जल्दी हो जाती है।

सूयादि ग्रह फल –

सूर्य का फल –

सूर्य दुसरे भाव का स्वामी होकर दशम भाव में अपनी उच्च राशि का स्थित है। सूर्य किसी भी ग्रह से युत एवं दृष्ट नहीं है तथा लग्नेश से दूसरा है।

नवांश पत्रिका में सूर्य अपनी सिंह राशि का नवम में लग्नेश चन्द्रमा से बारहवें भाव में साथ स्थित है ।

जातिका की वाणी प्रभावशाली होगी। जातिका का परिवार भी सम्मानित होगा। जातिका न्यायप्रिय एवं आदर्शवादी होंगी। जातिका आत्मबल एवं आत्मविश्वास से भरपूर होंगी। आपके अंदर नेतृत्व की अद्भुत क्षमता होगी। जातिका के पिता भी समाज में प्रतिष्ठित होंगे। जातिका किसी भी कार्य को नियमानुसार व अनुशासन के साथ करेंगी सरकारी एवं सरकारी कार्यों से धन की प्राप्ति एवं पिता के धन का समुचित उपयोग करने वाली होंगी। आप पिता का सम्मान करेंगी। आप उच्च पद प्राप्ति की तरफ हमेशा अग्रसर रहेंगी। पिता का सहयोग हमेशा प्राप्त होगा। कार्यक्षेत्र में पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ काम करेंगी । जातिका अच्छे संस्कारों को लेकर आगे बढ़ेंगी और उच्च पद पर आसिन होंगी। जातिका में नेतृत्व करने की क्षमता होगी । स्वास्थ्य हमेशा अच्छा रहेगा ।

चन्द्रमा का फल –

चन्द्रमा जातिका की पत्रिका में लग्न का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतीयेश बुध, पंचमेश एवं दशमेश मंगल, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है।

नवांश पत्रिका में चन्द्रमा दसम भाव में कन्या राशि का स्थित है ।

ज्योतीष में लग्नेश चन्द्रमा की नवम भाव में स्थिति को उत्तम स्तिथि कहा गया है। जातिका भाग्यवान और बुद्धिमान है। जातिका अपने माता–पिता के विषय में चिंतित रहेंगी। जातिका सदा अपने कार्य के प्रति तत्पर रहेंगी। किसी भी कार्य को बुद्धिमत्ता व गहराई से समझ कर करना चाहेंगी। चन्द्रमा द्विस्वभाव राशि में लग्न एवं नवांश दोनो जगह होने के कारण मन में एक द्वन्द की स्थिति हमेशा बनी रहेगी। किसी भी विषय पर कोई भी निर्णय लेते समय दो बार सोचेंगी ।

यहां उसे माता –पिता या अन्य लोगों से निर्णय के लिए सलाह की आवश्यक्ता होगी। जातिका कार्यकुशल एवं धनी होंगी। अपने से बड़ों एवं गुरुजनों का आदर करेंगी और मन हमेशा कार्य के उपर केन्द्रित होगा। माता का अशीष एवं सहयोग हमेशा प्राप्त होगा। आपकी समाज में एक सम्माननीय व आदरणीय स्थिति होगी। खेलकूद, कला, गायन, वादन इत्यादि में विशेष रूचि होगी। हर विषम परिस्तिथि में कार्य को सँभालने की क्षमता आपमें होगी। आन्तरिक मन कोमल व चंचल होगा। हमेशा अपने वजन का ध्यान रखना होगा साथ ही किसी के बातों में जल्दी आने से बचना होगा । षडबल में चन्द्रमा कमजोर होने के जातिका को हमेशा किसी न किसी के मानसिक सहयोग की आवश्यक्ता होगी किसी का साथ मिल जाने से जातिका अपने आपको मानसिक रूप से बलवान महसूश करेगी ।

मंगल का फल –

मंगल जातिका की पत्रिका में पंचम एवं दशम का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतीयेश बुध, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है।

नवांश पत्रिका में मंगल चतुर्थ भाव में मीन राशि का गुरु के साथ स्थित है और लग्नेश से समसप्तक में है।

जातिका साहसी, पराक्रमी, उत्साही, आत्मविश्वासी, शरीर से सुदृढ़, खेल–कूद व गणित–विज्ञान में रूचि लेने वाली होंगी। जातिका एक साथ कई कार्यो को बड़े सोच–समझ कर करने वाली होंगी और जल्दबाजी करना पसंद नहीं करेंगी। मंगल की दशान्तर्दशा में चोट–चपेट आदि की संभावना है। जातिका को सरदर्द की परेशानी भी हो सकती है। यहां विशेष सावधानी की आवश्यक्ता होगी। जातिका को छोटे भाई–बहन होने पर उसका सुख एवं सहयोग साथ ही छोटे भाई–बहनों को भी तरक्की मिलने की संभावना है। जातिका छोटे भाई–बहनों का ध्यान रखने वाली होंगी और उनका सहयोग भी करेंगी। जातिका की उच्च शिक्षा भी अच्छी होगी और हर कदम माता–पिता का सहयोग मिलेगा। जातिका गहराई से विषयों को समझेंगी। कभी–कभी किसी विषय पर माता–पिता से तर्क–वितर्क हो सकता है। कार्यक्षेत्र में भाग्य का भी सहयोग मिलेगा।

बुध का फल –

बुध जातिका की पत्रिका में तीसरे एवं बाहरवें का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है।

नवांश पत्रिका में बुध दुसरे भाव में मकर राशि का साथ स्थिति है और लग्नेश से 5/9 के अक्ष में है।

जातिका बुद्धिमान, प्रतिभाशाली, एवं सरल हृदय की होंगी। हरेक काम को अपनी बुद्धिमता एवं समझदारी से पुरा करेंगी। गणित, विज्ञान, व्यवसायिक शिक्षा या कला आदि के प्रति विशेष रूचि होगी, खेल–कूद आदि में भी रूझान होगा। जातिका हास्य एवं व्यंग एवं कला आदि के क्षेत्र में भी आनंद लेंगी। जातिका की स्मरण शक्ति भी अच्छी होगी। विषय वास्तु को जल्दी समझ लेंगी । मन में भरपूर कामनएं होंगी और बुद्धि से काम लेकर उचाईयों तक पहुचने का सामर्थ्य होगा। जातिका की पैतृक व्यवसाय आदि में विशेष चाहत होगी एवं अपने बुद्धिबल से सफल होंगी। जातिका कभी शांत और स्थिर रहना नहीं चाहेंगी। हमेशा काम या काम के विषय में सोचती रहेंगी। जातिका हिम्मत और भाग्य के साथ से हमेशा उचाईयों प्राप्त करती रहेंगी। जातिका का विदेश से विशेष सम्बन्ध होगा। जातिका सुचनाओं को ग्रहण करने के लिए भी अग्रसर रहेगी जातिका विवेकपूर्ण ढंग किसी भी कार्य को अंजाम देंने में सक्षम होंगी। यश व मानसम्मान की प्राप्ति होगी। किसी भी कार्य को अनुशासन के साथ करना पसंद करेंगी।

गुरु का फल –

गुरु जातिका की पत्रिका में छठे एवं नवम भाव का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतीयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है ।

नवांश पत्रिका में गुरु चतुर्थ भाव में मीन राशि का मंगल के साथ स्थित है और लग्नेश से सातवें भाव में है।

जातक समझदारी एवं विवेक के साथ आगे बढ़ने का प्रयास करेगा एवं शिक्षा संबंधी विषयों पर विशेष ध्यान देगी। मन पढ़ाई में विशेष लगाना जरूरी है। यदि लगातार ध्यान दिया जाय तो बहुत अच्छी पढ़ाई करने में सफल होगी । जातिका ज्ञानी एवं समझदार होंगी। सोच–समझ कर ही किसी निर्णय पर पहुचेंगी। जातिका का हृदय उदार होगा एवं गुरुजनो के प्रति आदरपूर्ण व्यवहार रखेंगी। जातिका की अध्यात्म में रूचि होगी और किताबों के अध्यन में जातिका अधिक रूचि लेंगी धार्मिक आयोजनों का संचालन करने में समर्थ होंगी माता–पिता का सहयोग भी करेंगी। पिता का साथ एवं सहयोग मिलेगा एवं पिता के आज्ञा का पालन भी करेंगी। जातिका को भाग्य का साथ हमेशा मिलेगा एवं लाभ व धन की कभी कमी नहीं होगी । जातिका सिद्धांतो को मानाने वाली होंगी। जातिका के पिता ज्ञानी, विद्वान व समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे गुरु क्यूंकि षष्ठेश भी है और मूलत्रिकोण राशि छठे भाव में है तो यहाँ पिता को स्वस्थ्य पीड़ा हो सकती है। जातिका के पिता शास्त्रों के ज्ञाता भी होंगे, आगे चलकर हो सकता है जातिका की रूचि भी शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने का हो या दर्शन के प्रति अधिक झुकाव हो। कार्य क्षेत्र व धनार्जन में पिता का विशेष सहयोग मिलेगा।

शुक्र का फल –

शुक्र जातिका की पत्रिका में चतुर्थ एवं एकादश भाव का स्वामी होकर नवम भाव में षष्ठेश और नवमेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतीयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है।

नवांश पत्रिका में शुक्र द्वादश भाव में वृश्चिक राशि क साथ स्थित है और लग्नेश से 3/11 के अक्ष में है।

जातिका देखने में आकर्षक एवं मिलनसार होंगी एवं आरमदेह जीवन जीना पसंद करेंगी । जातिका सुन्दर वस्त्रादि की शौकीन होंगी। सौन्दर्य के प्रति सजग होंगी एवं नए परिवेश के हिसाब से अपने आपको ढाल लेंगी। सुन्दर वस्तुओं के प्रति आकर्षण विशेष होगा। जातक अपनी सभी कामनाओं की पूर्ति के लिए सदैव प्रयासरत रहेंगी और इस प्रयास में भाग्य और माता–पिता का सहयोग प्राप्त होगा। जातिका को जीवन में भूमि–भवन, माकान एवं कई वाहनों का सुख प्राप्त करेंगी। जातिका कोई बड़ा व्यवसाय भी कर सकती है। जातिका गुणवान होंगी एवं जातिका की माता सुसंस्कृत व समझदार होंगी। जातिका का रुझान नृत्य, कला संगीत की तरफ भी होगा। जातिका को राजकीय व्यक्तियों से लाभ प्राप्ति की संभावनाएं भी हैं। जातिका के जीवन में सभी प्रकार की समृद्धि एवं सम्पन्नता होगी। जातिका को पैतृक संपत्ति का भी लाभ प्राप्त होगा। विपुल धन की कभी कमी नहीं होगी। शुक्र की दशाओं में जीवन में सभी सांसारिक सुखों की विशेष प्राप्ति होगी ।

शनि का फल –

शनि पत्रिका में सप्तमेश व अष्टमेश होकर तीसरे भाव में कन्या राशि का स्थित है एवं नवम भाव में स्थित मंगल, बुध, गुरु, चंद्र एवं शुक्र से दृष्ट है।

नवांश पत्रिका में शनि सप्तम मिथुन राशि का स्थित है लग्नेश चन्द्रमा के साथ 4/10 के अक्ष में है ।

तीसरे भाव में शनि को ग्रह के रूप में बलवान कहा गया है। जातिका भीड़ की मनोदशा को समझने में सामर्थ्यवान होंगी। जातिका का व्यवहार अपने से छोटो के प्रति अच्छा होगा और उनको समझने का प्रयास करेंगी। कभी–कभी थोड़ी अनबन संभव है। जातिका की जिस भी विषय में रूचि होगी उसका अध्ययन सूक्षम्ता से करना चाहेंगी। जातिका कार्य करने में कभी–कभी थोड़ा आलस्य दिखा सकती है। अपने से छोटों की तन–मन –धन से मदद करेंगी। यहाँ शनि की दृष्टि से पिता का स्वस्थ्य बाधित हो सकता है । जातिका में संघर्ष करने का भरपूर समर्थ होगा। हर परिस्तिथि में आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत रहेंगी। जातिका कर्मठ होंगी। जातिका कभी कर्म करने से पीछे नहीं हटेंगी। आपका प्रभावशाली व्यक्तियों से संपर्क रहेगा। आप अनेकों लोगो को आश्रय देने वाली होंगी। छोटी–मोटि चोट आदि की सम्भावना हो सकती है। अपने से ओहदे में छोटे तथा उम्र में छोटे लोगों का साथ एवं सहयोग मिलेगा ।

राहु का फल –

राहु जातिका की पत्रिका में धनु राशि का छठे स्थान में स्थित है। राहु छठे व नवम दोनों भाव का फल करेगा। लग्नेश से चार–दस के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में राहु पंचम भाव में मेष राशि का स्थित है। नवांश में लग्नेश से 6/8 के अक्ष में है।

राहु को छठे भाव में बलवान कहा गया है। राहु यहाँ बैठकर जातिका को साहसी एवं अपने प्रतियोगियों का सामना करने में सामर्थ्यवान बनता है। गुरु की राशि में होने से जातिका कभी भी गलत योजनाओं से किसी को हानि नहीं पहुचाएंगी। परन्तु कार्यक्षेत्र में उन्नति को लेकर योजनाएं बनाती रहेंगी। लग्न से छठा होने से यहाँ स्थित राहु आपको संघर्षशील बनाता है। आप अपने भाग्य का निर्माण करने का प्रयास हमेशा करती रहेंगी। आप निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए दिखावा नहीं करेंगी और अंतिम परिणाम देने पर भरोसा रखेंगी।

केतु का फल –

केतु पत्रिका में द्वादश भाव में मिथुन राशि का स्थित है और मंगल एवं केतु से दृष्ट है। केतु द्वादश व तीसरे दोनों का फल करेगा। लग्नेश चंद्र से चार–दस के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में केतु एकादश भाव में तुला राशि का स्थित है। लग्नेश चंद्र से 2/12 के अक्ष में है ।

ज्योतिष में केतु को बाहरवें भाव में शुभ नहीं कहते। लग्न से बाहरवें होने से और मंगल और शनि की दृष्टि के कारण स्वस्थ्य बाधित हो सकता है। जातिका गूढ़ विषयों को जानने वाली होंगी। जातिका नित्य पराक्रम करने से पीछे नहीं हटेंगी। खुद परेशान होकर भी साहस से आगे बढ़ती रहेंगी। किसी भी विषय वस्तु को समझने में गंभीरता दिखाएंगी। जातिका के छोटे भाई–बहन विदेश में निवास कर सकते है। यहाँ उनके जीवन में उतार–चढ़ाव लगा रहेगा। केतु की दशाओं में केतु बुध की तरह फल करेगा लकिन आपको भय एवं भ्रम की अनुभूति होगी। हमेशा स्वभाव को नियंत्रित रखना होगा ।

शनि में मंगल की अन्तर्दशा –

शनि में राहु की अन्तर्दशा – 30–07 –2019 से 05–06–2022

जातिका की उम्र यहाँ 12 साल के आसपास होगी।

राहु जातिका की पत्रिका में धनु राशि का छठे स्थान में स्थित है। राहु छठे व नवम दोनों भाव का फल करेगा। लग्नेश और दशानाथ दोनों से चार–दस के अक्ष में है ।

नवांश पत्रिका में राहु पंचम भाव में मेष राशि का स्थित है। नवांश में लग्नेश से 6/8 के अक्ष में है और दशानाथ से तीन–ग्यारह के अक्ष में है।

जातिका इस उम्र में अपनी पढ़ाई के प्रति सतर्क होंगी परन्तु माता–पिता को हमेशा ध्यान रखना होगा । मित्रों से घुलना–मिलना पसंद होगा। कभी–कभी पढ़ाई से मन में भटकाव संभव है। माता–पिता से व्यवहार अनुकूल रहेगा तथा उनके साथ रहना अधिक पसंद करेंगी। अपनी सभी बातों को माता–पिता से बताएंगी। आलस्य अधिक होगा इसपर ध्यान रखना होगा । आज के काम को कभी–कभी कल पर टाल सकती है फिर भी हमेशा अच्छा प्रद्रर्शन करना चाहेंगी।

छठा स्थान सक्रिय होने के कारण स्वस्थ्य का ध्यान देना होगा । बहार के खानपान से बचें तथा किसी भी प्रकार की परेशानी होने पर चिकित्सक का सलाह लेना अनिवार्य है । बीच–बीच में आने वाली प्रत्यंतर दशा अपना प्रभाव डालेंगी फिर भी इस उम्र के लिए दशा ठीक है।

शनि का गोचर भी अपनी ही राशि में होने के कारण शनि की दशा अनुकूल रहेगी और यह दशा समय का सदूपयोग करने के लिए अच्छा कहेंगे। अपने से छोटों के साथ व्यवहार अनुकूल रहेगा क्यूंकि शनि की दृष्टि चन्द्रमा पर है इसीलिए मन परेशान हो सकता है।

शनि में गुरु की अन्तर्दशा – 05–06–2022 से 16–12–2024 तक

जातिका की उम्र यहाँ 14–15 साल के आसपास होगी।

गुरु जातिका की पत्रिका में छठे एवं नवम भाव का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतीयेश बुध के साथ स्थित है । तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है और दशानाथ से सप्तम है।

नवांश पत्रिका में गुरु चतुर्थ भाव में मीन राशि का मंगल के साथ स्थित है और लग्नेश से सातवें स्थान में है। दशानाथ से चार–दस का सम्बन्ध है।

जातिका समझदारी एवं विवेक के साथ आगे बढ़ने का प्रयास करेगी एवं शिक्षा संबंधी विषयों पर विशेष ध्यान देगी। मन पढ़ाई में विशेष लगाना जरूरी है। माता–पिता को इसका ध्यान रखना चाहिए। बड़ों का आदर करेगी। घर में मांगलिक कार्य होंगे और घर परिवार का मान यश बढ़ेगा। परिवार के विशिष्ट लोगों से मिलना–जुलना होगा। गुरुजनों का सहयोग मिलेगा और अपने लक्ष्य को भेदने में सफल होगी। इस दशा में मीठे भोजन की इच्छा अधिक होगी । यह समय जीवन में आगे की शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण है इसलिए समय का सदुपयोग करना उचित होगा। अपने मित्रों का भी भरपुर सहयोग करेंगी। जीवन में किसी प्रकार की कमी महशुस नहीं करेगी ।

पिता एवं घर–परिवार के लोगों का भी मन धार्मिक कृत्यों में लगा रहेगा तथा नए कार्यों एवं कार्य के विकास के लिए समय अनुकुल है ।

इन दशाओं में जातिका की साढ़ेसाती भी चल रही होगी जिस कारण से मनः स्थिति में थोड़ी बहुत परेशानी हो सकती है क्यूंकि दशा भी शनि की ही है । यहाँ योग आदि का सहारा लें एवं अपने परिवार वालों की राय से ही आगे की पढ़ाई से सम्बंधित फैसले लेने चाहिए ।

बुध में बुध की अन्तर्दशा – 16–12–2024 से 15–05–2027

जातिका की उम्र यहाँ 16–17 के आसपास होगी।

बुध जातिका की पत्रिका में तीसरे एवं बाहरवें का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है। तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है।

नवांश पत्रिका में बुध दुसरे भाव में मकर राशि का साथ स्थिति है और लग्नेश से 5/9 के अक्ष में है।

शनि की महादशा की समाप्ति के बाद बुध की महादशा का उम्र के इस पड़ाव पर प्रारम्भ होना जातिका की शिक्षा के लिए बहुत अच्छा होगा। अभी साढ़ेसाती का थोड़ा मन पर प्रभाव रहेगा लकिन दशा अनुकूल होने से प्रभाव कम महसूस होगा।

जातिका अपनी बुद्धिमानी से अपने आगामी भविष्य के लिए प्रयासरत रहेंगी। हरेक काम को अपनी बुद्धिमता एवं समझदारी से पुरा करेंगी। गणित–विज्ञान, व्यवसायिक शिक्षा के साथ–साथ कला आदि के प्रति विशेष रूचि होगी, खेल–कूद आदि में भी रूझान होगा । जातिका हास्य एवं व्यंग एवं कला आदि के क्षेत्र में भी आनंद लेंगी। जातिका की स्मरण शक्ति भी अच्छी होगी। विषय वास्तु को जल्दी समझ लेंगी । मन में भरपूर इच्छाएं होंगी और अपनी बुद्धि और विवेक से काम लेकर सफलता तक पहुचेंगी। जातिका उच्च शिक्षा के लिए बाहर जा सकती है यहाँ जातिका डिजाइनिंग, मैनेजमेंट या बिजनेस स्टडीज के लिए बाहर जाकर पढ़ाई कर सकती है। जातिका कभी शांत और स्थिर रहना नहीं चाहेंगी। हमेशा काम या काम के विषय में सोचती रहेंगी। भाग्य का साथ से हमेशा सफलता प्राप्त करने में सहायक होगी। जातिका सुचनाओं को ग्रहण करने के लिए भी अग्रसर रहेगी, यहाँ कभी–कभी मन में आगामी भविष्य के लिए विषयों के चुनाव को लेकर द्वन्द हो सकता है।

बुध में केतु की अन्तर्दशा – 15–05–2027 से 11–05–2028

यहाँ जातिका की उम्र 18 के आसपास होगी।

केतु पत्रिका में द्वादश भाव में मिथुन राशि का स्थित है और मंगल एवं केतु से दृष्ट है। केतु द्वादश व तीसरे दोनों का फल करेगा। लग्नेश चंद्र और दशानाथ बुद्ध से चार–दस के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में केतु एकादश भाव में तुला राशि का स्थित है। लग्नेश चंद्र से तीन –ग्यारह के अक्ष में है और दशानाथ से चार–दस के अक्ष में हैं।

अन्तर्दशा नाथ का बारहवें स्थित होना अच्छा नहीं कहेंगे, यहाँ केतु तीसरा और बारहवें दोनों स्थान का फल करेगा। यहाँ आप हिम्मत से काम लेना चाहेंगी लेकिन मन में भ्रम की स्थिति होगी। गले में इन्फेक्शन आदि हो सकता है। यहां ध्यान देने की आवशयकता होगी। पढ़ाई के क्षेत्र में थोड़ी रूकावट या बदलाव हो सकता है, लेकिन यहाँ ज्यादा परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ घर से बाहर और भाई–बहनो से दूर रहने के कारण परेशानी हो सकती है। फिर भी जातिका नित्य पराक्रम करने से पीछे नहीं हटेंगी। खुद परेशान होकर भी साहस से आगे बढ़ती रहेंगी। किसी भी विषय वस्तु को समझने में गंभीरता दिखाएंगी। उम्र व ओहदे में छोटे लोगों से परेशानी हो सकती है छोटी–मोटी विदेश यात्राएं होती रहेंगी। स्वाभाव को नियंत्रित रखने का प्रयास करें, स्वाभाव में चिड़चिड़ापन आ सकता है इसलिए स्वभाव को नियंत्रित रखने का प्रयास करना चाहिए।

बुद्ध में शुक्र की की अन्तर्दशा – 11–05–2028 से 12–03–2031

जातिका की आयु 20–21 के आसपास होगी।

शुक्र जातिका की पत्रिका में चतुर्थ एवं एकादश भाव का स्वामी होकर नवम भाव में षष्ठेश और नवमेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतीयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है।

नवांश पत्रिका में शुक्र द्वादश भाव में वृश्चिक राशि क साथ स्थित है और लग्नेश से तीन–ग्यारह के अक्ष में है और दशानाथ से तीन–ग्यारह के अक्ष में है।

इन दशाओं में आपका स्वभाव मिलनसार एवं बातें नीति निपुण होंगी। नम्रता एवं परोपकार की भावना होगी। प्रवत्ति विलासी होगी। स्वादिष्ट भोजन करने की इच्छा होगी । सौन्दर्य के प्रति आर्कषण होगा। वस्त्राभूष के प्रति लगाव होगा। ापढ़ाई के साथ–साथ मित्रों एवं परिजनों से संपर्क भी बढ़ेगा। नवीन परिवेश के हिसाब से रहना चाहेंगी। यह आपके करियर का सबसे महत्वपूर्ण समय है, इस समय आपका पूरा ध्यान अपना भविष्य उज्जवल बनाने की तरफ होगा। आप उचाईयों को छूना चाहती है। आपका रुझान कला के क्षेत्र में भी हो सकता है। मन में कामनाएं भरपूर होंगी। भाग्य का साथ हमेशा मिलता रहेगा। आप मित्रों की प्रिय होंगी। यह दशा आपको उच्च शिक्षा में और करियर को आगे ले जाने में भरपूर सहयोग करेगी। मित्रों से मेलजोल बढ़ेगा। आप बुद्विमता एवं माता–पिता के सहयोग से आगे बढ़ेंगी। कामना की अधिकता के कारण मन को संतोष नहीं होगा परिवार के साथ घुमने–फिरने एवं समय विताने का अवसर प्राप्त होगा होगा। माता के प्रति विशेष लगाव होगा ।

बुद्ध में सूर्य की अन्तर्दशा– 12–03–2031 से 16–01–2032

जातिका की उम्र यहाँ 21–22 आसपास होगी।

सूर्य दुसरे भाव का स्वामी होकर दशम भाव में अपनी उच्च राशि का स्थित है। सूर्य किसी भी ग्रह से युत एवं दृष्ट नहीं है तथा लग्नेश और दशानाथ से दूसरा है।

नवांश पत्रिका में सूर्य अपनी सिंह राशि का नवम में लग्नेश चन्द्रमा से बारवें भाव में स्थित है और दशानाथ से छह–आठ के अक्ष में है।

जातिका की वाणी प्रभावशाली होगी और जातिका उत्साह से भरपूर होंगी। जातिका इस समय पूरे उत्साह के साथ कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ेंगी और भविष्य से जुडी योगनाओं में सफलता हासिल करेंगी। कार्यक्षेत्र से सम्बंधित अच्छी खबर मिल सकती है बोलने में जल्दबाजी करेंगी । गुस्सा भी तेज हो सकता है। अनुशासन से कार्य करने का प्रयास करेंगी। यहाँ स्वयं का स्वभिमान जागृत होगा। यहाँ आपको जॉब का भी अवसर मिल सकता है और आप पढ़ाई के साथ–साथ जॉब जॉब भी कर सकती हैं। जातिका आत्मबल एवं आत्मविश्वाश से भरपूर होंगी। आप किसी बड़ी कंपनी का नेतृत्व भी कर सकती हैं । यहाँ शिक्षा से सम्बंधित स्कॉलरशिप या सरकार से सम्मान भी प्राप्त हो सकता है। पिता की भी अपने कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। आप घर से बहार जॉब और उच्च शिक्षा के लिए जा सकती है। पिता से विशेष जुड़ाव महसूस करेंगी एवं बातों को साँझा करना चाहेंगी। जातिका किसी भी कार्य को नियमानुसार व अनुशासन के साथ करेंगी। आप उच्च पद प्राप्ति की तरफ हमेशा अग्रसर रहेंगी। पिता का सहयोग हमेशा प्राप्त होगा। जातिका अच्छे संस्कारों को लेकर आगे बढ़ेंगी और उच्च पद पर आसिन होंगी। आगामी दशाएं करियर के लिए अच्छी होंगी।

बुध में चन्द्रमा की अन्तर्दशा – 16–01–2032 से 17–06–2033

जातिका की उम्र यहाँ 22–23 आसपास होगी।

चन्द्रमा जातिका की पत्रिका में लग्न का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतीयेश बुध, पंचमेश एवं दशमेश मंगल, षष्टेश और भ्ग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है।

नवांश पत्रिका में चन्द्रमा दसम भाव में स्थिति है। नवांश में चन्द्रमा दशानाथ से 5/9 अक्ष में है।

जातिका के स्वभाव में सौम्यता के साथ–साथ समझदारी भी होगी । मन से भावुक रहेंगी और शनि की दृष्टि मन में चिंता दे सकती है। भावुकता में उतार–चढ़ाव भी रहेगा । मन के अनुसार ही काम करना पसंद करेंगी। जातिका का भाग्य उन्हें उचाईयों पर ले जाएगा। माता से सहयोग मिलेगा, यहाँ हो सकता है की जातिका माता के कार्यक्षेत्र में रूचि लें। जातिका का झुकाव कला एवं खेलकूद में भी होगा। मन में कार्य को लेकर दुविधा भी हो सकती है। स्त्रीपक्ष के साथ–साथ माता से सहयोग प्राप्त होगा मान–सम्मान प्राप्त करना चाहेगी। जातिका के सामर्थ्य का विकास होगा। मन की बुलंदी के साथ काम करना पसंद करेंगी। घर वाहन एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होगा ।

मन को हमेशा मजबुत रखने का प्रयास करना चाहिए किसी भी तरह की बात मन में आए तो अपने घर वालों के साथ साझा करने का लाभ मिलेगा ।

बुध में मंगल की अन्तर्दशा – 17–06–2033 से 14–06–2034

जातिका की उम्र जहाँ 24 के आसपास होगी।

मंगल जातिका की पत्रिका में पंचम एवं दशम का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतीयेश बुध, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ बुध के साथ स्थित है।

नवांश पत्रिका में मंगल चतुर्थ भाव में मीन राशि का गुरु के साथ स्थिति है और लग्नेश से सातवें भाव में स्थित है तथा दशानाथ से तीन–ग्यारह के अक्ष में है।

मंगल कर्म स्थान का स्वामी है, अगर पहली दशाओं में कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ है तो इन दशाओं में प्रगति होगी या उच्च शिक्षा के साथ–साथ कार्य प्रारम्भ भी कर सकती है। जल्दी से निर्णय लेने का प्रयास करेंगी और स्वभाव में उग्रता आने की संभावना है। जातिका उर्जा एवं उत्साह से भरपुर होंगी एवं सभी विषय–वस्तु को तर्क से समझना चाहेंगी। आपने शरीर को सुदृढ़ रखने के लिए जिम, योगा आदि का सहारा लेंगी। व्यवहार, विचार एवं कार्य क्षेत्र में स्फूर्ति दिखाई देगी। जातिका के सामर्थ्य का भरपुर विकास होगा। इन दशाओं में नए मित्र भी बन सकते है। छोटे भाई–बहन एवं उम्र में छोटे लोग मित्रादि का सहयोग होगा लेकिन किसी से भी वाद–विवाद न हो इस बात का ध्यान रखें। कार्य एवं विकास के लिए तीव्र गति से काम करना पसंद करेंगी । यदि व्यवसाय के विषय में सोच रही है तो समय साथ देगा।

बुध में राहू की अन्तर्दशा – 14–06–2034 से 31–12–2036

जातिका की उम्र यहाँ 26 साल के आसपास होगी।

राहु जातिका की पत्रिका में धनु राशि का छठे स्थान में स्थित है। राहु छठे व नवम दोनों भाव का फल करेगा। लग्नेश और दशानाथ दोनों से चार –दस के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में राहु पंचम भाव में मेष राशि का स्थित है। नवांश में लग्नेश से 6/8 के अक्ष में है और दशानाथ से चार–दस के अक्ष में है।

जातिका अपने कार्यक्षेत्र में योजनाओं के दम पर अग्रसर रहेंगी। प्रतियोगियों का सामना करने का भरपूर सामर्थ्य होगा। कार्यक्षेत्र में तरक्की की तरफ अग्रसर रहेंगी। राहु क्यूंकि गुरु की तरह काम करेगा तो दशाओं में शादी–विवाह की भी संभव है क्यूंकि यहाँ गोचर का भी साथ प्राप्त होगा या सगाई आदि की बात भी हो सकती है। अगर किसी कारण वश इन दशाओं में कोई मांगलिक कार्य नहीं होता है तो आगामी गुरु की दशाओं अवश्य होगा क्यूंकि यहाँ जातिका की उम्र का भी ध्यान रखा गया है। यहाँ जातिका हर समय कुछ न कुछ नया करने की सोचती रहेंगी। स्वस्थ्य के दृष्टिकोण से समय उत्तम है। नए लोगो से भेंट संभव है लकिन जांचपरख

कर ही दोस्ती करें या कार्यक्षेत्र में सहयोग लें या दें। आप अपनी स्वयं की योजनाओं पर विशेष ध्यान देंगी। किसी अन्य का सलाह मानना उचित नहीं लगेगा तथा अपने कार्य व्यवसाय को बढ़ाने के लिए विशेष तत्परता दिखाऐंगी । किसी भी तरह के बड़े निवेश के लिए योग्य व्यक्ति से सलाह लेना जरूरी समझें। लाभ में उतार–चढ़ाव संभव है क्यूंकि राहु तीव्रता से योजनाएं बनवाएगा और लाभ से छठे भी स्थित है । मन के उपर विशेष नियंत्रण रखने की जरूरत है। परिवार आदि के साथ सहयोग बनाकर चलें। समझदारी के साथ काम करने पर तथा धर्मानुसार आचरण होने पर भाग्य का साथ भी मिलेगा।

बुध में गुरु की अन्तर्दशा – 31–12–2036 से 08–04–2039

जातिका की उम्र यहाँ 29 साल के आसपास होगी।

गुरु जातिका की पत्रिका में छठे एवं नवम भाव का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतीयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है और दशानाथ के साथ है।

नवांश पत्रिका में गुरु चतुर्थ भाव में मीन राशि का मंगल के साथ स्थित है और लग्नेश से सातवें भाव में स्थित है। दशानाथ से तीन–ग्यारह का सम्बन्ध है।

जातिका के व्यवहार और विचारों में समझदारी झलकेगी। हर काम को अपनी जिम्मेदारी समझेंगी। इन दशाओं में काम में प्रगति होगी और एक अच्छे पद को प्राप्त भी कर सकती है। गुरुजनों और घर के बड़ों का आशीर्वाद हर कार्य में आपके साथ होगा। अगर पिछली दशाओं में शादी नहीं हुई तो इन दशाओं में विवाह हो जाएगा और हम सलाह देंगे की अगर यहाँ विवाह हो गया है तो संतान प्राप्ति के लिए अग्रसर होना चाहिये क्यूंकि ये दशाए अनुकूल है, आगे आने वाली दशाओं में देरी संभव है।

गुरु की दृष्टि सप्तमेश शनि पर भी है यहाँ जीवन साथी का सहयोग प्राप्त होगा। पिता का सहयोग भी मिलेगा। पिता को अपने स्वस्थ्य का ध्यान भी रखना होगा। शनि की दृष्टि गुरु पर होने से कभी–कभी संतोष की कमी महसूस होगी और शांति प्राप्ति की इच्छा होगी। अपने वजन पर ध्यान देना होगा। आपकी कार्य से सम्बंधित यात्राएं भी संभव है। धन एवं लाभ की कमी नहीं होगी। आप आगे और प्रगति के लिए पढ़ाई भी कर सकती है।

बुध में शनि की अन्तर्दशा – 08–04–2039 से 16–12–2041

जातिका की उम्र यहाँ 31 साल के आसपास होगी।

शनि आपकी पत्रिका में सप्तमेश व अष्टमेश होकर तीसरे भाव में कन्या राशि का स्थित है। एवं नवम भाव में स्थित मंगल, बुध, गुरु, अशुभ चंद्र एवं शुक्र से दृष्ट है। दशानाथ और लग्नेश दोनों से सप्तम है ।

नवांश पत्रिका में शनि सप्तम में मिथुन राशि का स्थित है। दशानाथ से 6/8 का सम्बन्ध है और लग्नेश से 4/10 का सम्बन्ध है।

बुध की महादशा में यह आखरी अन्तर्दशा है और इसे हम दशा छिद्र कहते है । इन दशाओं में कार्यक्षेत्र में जीवनसाथी एवं अन्य छोटे सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा लेकिन मन में एक चिंता व्याप्त रहेगी। कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है लेकिन प्रभाव प्रतिकूल नहीं होगा। गोचर में भी शनि यानि अन्तर्दशा नाथ अपनी उच्च राशि का होगा। थोड़ी बहुत परेशनियों के बाद सफलता हांसिल होगी। शनि की दृष्टि द्वादश स्थित केतु पर होने से स्वस्थ्य के प्रति सचेत रहें क्योंकि शनि का स्वाभाविक गुण रोगादि देना भी है। जीवनसाथी आपका पराक्रम बनकर आपके साथ खड़े रहेंगे, कभी–कभी थोड़ा बहुत मनमुटाव हो तो उसे भूलना चाहिए। आप जिम्मेदारी से परिवार, संतान एवं कार्य को सम्भलने का प्रयास करती रहेंगी। परिवार के सदस्यों के साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करें। इन दशाओं में थोड़ा आलस्य भी आ सकता है और जिस कारण मन परेशांन हो सकता है। यहाँ आपको योग आदि का सहारा लेना चाहिए।

केतु में केतु की अन्तर्दशा का फल – 16–12–2041 से 14–05–2042

जातिका की उम्र यहाँ 32 साल के आसपास होगी।

केतु पत्रिका में द्वादश भाव में मिथुन राशि का स्थित है और मंगल एवं केतु से दृष्ट है। केतु द्वादश व तीसरे दोनों का फल करेगा। लग्नेश चंद्र से चार–दस के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में केतु एकादश भाव में तुला राशि का स्थित है। लग्नेश चंद्र से 2/12 के अक्ष में है।

बुध की महादशा के बाद आपकी केतु की अन्तर्दशा प्रारम्भ होगी। महादशा बदलते ही सबसे ज्यादा प्रभाव जातिका के व्यवहार पर होगा। आपके अंदर एक चिड़चिड़ापन हो सकता है। बात–बात में मन में एक वहम की स्थिति होगी। मन परेशन हो सकता है। केतु की द्वादश स्थिति अच्छी नहीं कहेंगे और शनि की दृष्टि यहाँ परेशानियों को बढ़ा सकती है। इन दशाओं में विशेष स्वास्थ्य और मन में आने वाली दुविधाओं से बचना होगा। यहाँ आप योग या कोई नए विषय की जानकारी लेकर समय को सरलता से निकाल सकती हैं। यहाँ पूरी केतु की महादशा आपके स्वास्थय और मानसिक स्थिति को प्रभावित करेगी। छोटे भाई और आपके सहयोगियों के प्रति व्यव्हार में अनुकूलता बनाए रखें।

केतु में शुक्र की अन्तर्दशा – 14–05–2042 से 15–07–2043

जातिका की उम्र यहाँ 33 साल के आसपास होगी।

शुक्र जातिका की पत्रिका में चतुर्थ एवं एकादश भाव का स्वामी होकर नवम भाव में षष्ठेश और नवमेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतीयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ से चार–दस का सम्बन्ध है।

नवांश पत्रिका में शुक्र द्वादश भाव में वृश्चिक राशि का स्थित है और लग्नेश से 3/11 के अक्ष में है और दशानाथ से दो–बारह के अक्ष में है।

इन दशाओं में आपका स्वभाव मिलनसार होगा लेकिन थोड़ा शांत भी होगा क्यूंकि यहाँ स्वाभाव पर केतु का प्रभाव भी होगा। मन में अनेकों बातें चलती रहेंगी। नम्रता और परोपकार की भावना आप में समाहित होगी। धन–धान्य की कमी नहीं होगी जीवन आरामदेह हो इसका अधिक ध्यान रहेगा । घरेलु सुख–सुविधा की वस्तुओं की खरीद आदि का विचार होगा। कार्य क्षेत्र के उपर भी ध्यान बना रहेगा । सांसारिक सुख–भोगों के प्रति मन आकर्षित होगा । लेकिन प्रसन्ता को बरकरार रखने का प्रयास करना होगा। केतु सप्तम से छठा स्थित है, यहाँ स्थित केतु वैवाहिक जीवन में नीरसता उतपन्न कर सकता है। सौन्दर्य संपन्न लोगों एवं वस्तुओं से आपका विशेष लगाव होगा। नवीन वस्त्राभूषण एवं धन संपदा की प्राप्ति होगी। कामना की अधिकता के कारण मन को संतोष नहीं होगा। पिता का विशेष सहयोग मिलेगा। पिता के मान सम्मान में वृद्धि होगी। इन दशाओ में संतान आदि की बात हो सकती है क्यूंकि शुक्र सप्तांश पत्रिका का लग्नेश भी है लकिन सप्तांश में शुक्र अष्टम में है इसीलिए अगर आप संतान की चाह रखते है तो पहले मन में स्थिरता लाने का प्रयास करें क्यूंकि यहाँ केतु की स्थिति अच्छी नहीं है इसलिए चिकित्सकीय सलाह लेनी पड़ सकती है या गर्भधारण के बाद परेशानी आ सकती है। नया घर वाहन आदि खरीद सकते है। घर–मकान आदि में आन्तरिक सज्जा कराने की चेष्टा करेंगी। यश और मान–सम्मान बढ़ेगा। माता के प्रति विशेष लगाव हो सकता है ।

केतु में सूर्य की अन्तर्दशा – 15–07–2043 से 19–11–2043

जातिका की उम्र यहाँ 33 साल के आसपास होगी।

सूर्य दुसरे भाव का स्वामी होकर दशम भाव में अपनी उच्च राशि का स्थित है। सूर्य किसी भी ग्रह से युत एवं दृष्ट नहीं है तथा लग्नेश से दूसरा और दशानाथ से तीन–ग्यारह का सम्बन्ध है।

नवांश पत्रिका में सूर्य अपनी सिंह राशि का नवम में लग्नेश चन्द्रमा से बारहवां स्थित है और दशानाथ से तीन–ग्यारह के अक्ष में है।

स्वभाव में परिवर्तन आएगा। बोलने में जल्दबाजी करेंगी। गुस्सा कभी–कभी तेज हो सकता है । अनुशासित आप हमेशा से है यहाँ ज्यादा अनुशासन में रहकर कार्य करने का प्रयास करेंगी । स्वयं का स्वभिमान जागृत होगा। परिवार यदि राजनीति से जुड़ा हो तो यहां जातिका राजनीति में भी सक्रिय हो सकती है या जातिका सरकार से लाभन्वित हो सकती है, कार्यक्षेत्र के लिए दशा अच्छी है। अपनी हिम्मत के दम पर आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत रहेंगी। धन–सम्पदा में

वृद्धि होगी। यहाँ सहयोगियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। कार्य के सम्बन्ध में घर से दूर भी जाना पड़ सकता है । कार्य क्षेत्र में पदोन्नति होने की संभावना है । आपका पूरा ध्यान अपने कार्य पर केंद्रित होगा अगर पिछली दशाओं में स्वास्थ्य से परेशान थी तो यहाँ स्वस्थ्य में सुधार होगा। उच्च पद प्राप्ति के लिए आगे पढ़ाई करना चाहें तो दशा अनुकुल है । अपने सगे–संबंधियों को अपने प्रभाव में रखने का प्रयास करेंगी जिससे रिश्ते में परेशानी हो सकती है। पिता के साथ विचारों में सामंजसय होगा और पिता का सहयोग हर पग पर बना रहेगा। यहां पिता को भी विशेष लाभ व सम्मन मिलने की संभावना है । पिता के मान–सम्मान में बृद्धि होगी साथ ही पिता अपने कार्यों को आगे बढ़ाने का प्रस्ताव रखेंगे। किसी न किसी रूप में यहां से धन का आगमन संभव है। जीवन साथी से सामंजस्य बनाए रखे। कार्य में व्यस्तता और केतु का मन पर प्रभाव के कारणवश रिश्तों पर असर दिख सकता है एवं माता के भी कार्यक्षेत्र में तरक्की संभव है।

केतु में चन्द्रमा की अन्तर्दशा – 19–11–2043 से 19–06–2044

जातिका की उम्र यहाँ 35 आसपास होगी।

चन्द्रमा जातिका की पत्रिका में लग्न का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतीयेश बुध, पंचमेश एवं दशमेश मंगल, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ से चार–दस के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में चन्द्रमा दसम भाव में स्थिति है। नवांश में चन्द्रमा दशानाथ से दो–बारह के अक्ष में है।

आपके स्वभाव में चिड़चिड़ापन के साथ–साथ सौम्यता भी बनी। आप मन से भावुक रहेंगी। भावुकता में उतार–चढ़ाव भी रहेगा। मन के अनुसार ही काम करना पसंद करेंगी।यहाँ माता के स्वस्थ्य का ध्यान रखना होगा क्यूंकि शनि की दृष्टि भी चन्द्रमा पर है। इसीलिए आपका मन भी परेशान हो सकता है। जीवनसाथी और बच्चों के साथ सौम्यता बनाए रखे। मन की परेशानी और व्यवहार में प्रतिकूलता कार्यक्षेत्र पर भी प्रभाव डाल सकती है, लकिन कार्य में बहुत अधिक परेशानी होगी। आपको या आपके बदले व्यवहार से बांकि लोगों को दिक्कत हो सकती है, परन्तु आपका व्यवहार किसी को चोट पहुंचाने वाला नहीं होगा। कार्य एवं लाभ के प्रति सजग रहेंगे। कार्य–व्यवसाय में परिवर्तन की संभावना है। घर वाहन एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होगा ।

केतु में मंगल की अन्तर्दशा– 19–06–2044 से 16–11–2044

जातिका की उम्र जहाँ 35–36 के आसपास होगी।

मंगल जातिका की पत्रिका में पंचम एवं दशम का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतीयेश बुध, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ केतु से चार–दस के अक्ष में है

नवांश पत्रिका में मंगल चतुर्थ भाव में मीन राशि का गुरु के साथ स्थिति है और लग्नेश और दशानाथ दोनों समसप्तक में है।

दोनों ही दशानाथ अशुभ है। यहाँ स्वाभाव और स्वस्थ्य पर ध्यान दें। इन दशाओं में साहस, पराक्रम एवं उत्साह के साथ काम करना चाहेंगी। किसी भी कार्य को त्वरित निर्णय लेकर करना चाहेंगी लकिन यहाँ सलाह लेना उचित होगा। इन दशाओं में अपने संतान के स्वास्थ्य का भी ध्यान देना होगा। भाई के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाकर रखें। कोई वाद–विवाद हो सकता है, लेकिन आप उसे अपने बुद्धिमता से सुलझा लेंगी और हमेशा भाई और छोटे लोगो एवं सहकर्मियों का साथ देंगी। व्यवहार में जल्दबाजी करना उचित नहीं होगा। कार्यक्षेत्र से सम्बंधित फल सकारात्मक होंगे। यहाँ कभी–कभी प्रतियोगी परेशान कर सकते है। एवं शारीरिक व्यायाम आदि पर विशेष ध्यान रहेगा ताकि शरीर स्वस्थ एवं आकर्षक दिखे। कार्य व्यवसाय अच्छा रहेगा यहां भी प्रगति होने की संभावना है। इन दशाओं में प्रोपर्टी आदि में निवेश का विचार हो सकता है, उचित होगा के एक बार सलाह अवश्य ले ताकि उस वक्त की परिस्थितयों के अनुसार निर्णय ले सकें। जीवन साथी से मतभेद हो सकता है। केतु की सम्पूर्ण दशाओं में हम सिर्फ व्यव्हार को व्यवस्थित रखने की सलाह देंगे।

केतु में राहू की अन्तर्दशा – 16–11–2044 से 04–12–2045

जातिका की उम्र यहाँ 35–36 साल के आसपास होगी।

राहु जातिका की पत्रिका में धनु राशि का छठे स्थान में स्थित है। राहु छठे व नवम दोनों भाव का फल करेगा। लग्नेश से चार–दस के अक्ष में है और दशानाथ से सातवां है। नवांश पत्रिका में राहु पंचम भाव में मेष राशि का स्थित है।

नवांश में लग्नेश से 6/8 के अक्ष में है और दशानाथ से सातवां है।

इन दशाओं में मष्तिस्क में बैचनी उतपन्न होगी। मन–मस्तिस्क में अनेकों योजनाओं समावेश होगा, उनमें से कुछ व्यर्थ सिद्ध होंगी। यहाँ कार्यक्षेत्र में प्रतियोगीयों से सामना हो सकता है। कार्य क्षेत्र में तीव्रता से विस्तार देना चाहेंगी लेकिन कार्य की गति धीमी हो सकती है क्यूंकि गोचर का शनि इस समय धनु राशि में होगा। यहाँ जीवनसाथी के कार्यक्षेत्र में थोड़ा उतार–चढ़ाव आ सकता है। बड़े लोगों की सलाह समय–समय पर लेती रहें। किसी धार्मिक अनुष्ठान में रूकावट आ सकती है, लेकिन आप समझदारी और अपनी योजनाओं से परिस्तिथियों को सँभालने में सामर्थ्यवान होंगी। मन में भय एवं भ्रम व्याप्त रहेगा। परिवार जनों का सहयोग मिलेगा। खाने–पीने की बुरी आदतें हो तो सावधानी रखें। अच्छे लोगों की संगति में रहना उचित होगा। पिता के सेहत का ध्यान रखना है साथ ही उनके द्वारा लिए गए निर्णय से नुकसान आदि की

संभावना है। यहां राजनीति के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं तो प्रतियोगियों से सावधान रहें। मन को एकाग्रचित रखकर काम करने का विशेष लाभ प्राप्त होगा ।

केतु में गुरु की अन्तर्दशा – 04–12–2045 से 10–11–2046

जातिका की उम्र यहाँ 37 साल के आसपास होगी।

गुरु जातिका की पत्रिका में छठे एवं नवम भाव का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतीयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है और दशानाथ से चार –दस के अक्ष में है ।

नवांश पत्रिका में गुरु दशम भाव में मीन राशि का मंगल के साथ स्थित है और लग्नेश से सातवां और दशानाथ से 6/8 के अक्ष में है।

यहाँ स्वाभाव में थोड़ी अनुकूलता और शांति होगी। निर्णय लेने में जल्दबाजी नहीं करेंगी। इन दशाओं में मन शान्त रहेगा एवं अपने ज्ञान, विज्ञान के साथ विवेकपूर्ण तरीके से किसी कार्य को अंजाम देंगी । समझदारी से किसी भी समस्या का समाधान करने में सक्षम होंगी । उदारता के साथ धर्म–कर्म में रूचि बढ़ेगी एवं सेवा आदि के कार्य करेंगी। बच्चों के साथ ज्ञानपूर्ण वार्ता होगी। छोटे भाई–बहनों के प्रति सहयोग की भावना होगी एवं उनकी ओर से भी प्रसन्नता प्राप्त होगी। पारिवारिक जीवन में बच्चों के साथ पति का भी प्रेम एवं उत्साह के साथ सहयोग मिलेगा। यहां कार्य व्यवसाय अगर पिछली दशाओं में कोई परेशानी थी तो यहाँ समाप्त हो सकती है। धन–सम्पदा में वृद्धि होगी। बच्चे भी अपने क्षेत्र में बेहतर परिणाम देंगे। समय का सदुपयोग करना है साथ ही किसी के साथ वाद–विवाद न हो एवं रोगादि के प्रति सावधान रहने का प्रयास करना है ।

केतु में शनि की अन्तर्दशा – 10–11–2046 से 20–12–2047

जातिका की उम्र यहाँ 37 साल के आसपास होगी।

शनि आपकी पत्रिका में सप्तमेश व अष्टमेश होकर तीसरे भाव में कन्या राशि का स्थित है। एवं नवम भाव में स्थित मंगल, बुध, गुरु, अशुभ चंद्र एवं शुक्र से दृष्ट है। दशानाथ से चतुर्थ और लग्नेश से सप्तम है।

नवांश पत्रिका में शनि सप्तम मिथुन राशि का स्थित है। दशानाथ से 5/9 का सम्बन्ध है और लग्नेश से 4/10 का सम्बन्ध है।

इन दशाओं में मन में चिड़चिड़ापन व्याप्त रहेगा साथ ही परेशानी या नकारात्मकता आ सकती है। जिम्मेदार आप पहले से ही है ,फिर भी इन दशाओं भाई के प्रति विशेष जिम्मेदारी का बोध होगा। भाई के जीवन में उतार–चढ़ाव संभव है लकिन आप उनका साथ देंगी। छोटे कर्मचारियों एवं सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। इन दशाओं स्वस्थ्य में थोड़ी पीड़ा संभव है क्यूंकि दोनों

ही अशुभ गृह है और शनि की दृष्टि जन्म पत्रिका में केतु पर है। कार्य के साथ–साथ परिवार का भी विशेष ध्यान रखेंगी। कार्य एवं व्यवसाय के दृष्टि से समय अनुकुल है, थोड़ी–बहुत उतार –चढ़ाव होगा। यहां अपने संतान के उपर एवं परिवार के उपर विशेष ध्यान देना चाहिए ।

केतु में बुध की अन्तर्दशा – 20–12–2047 से 16–12–2048

जातिका की उम्र यहाँ 40 के आसपास होगी।

बुध जातिका की पत्रिका में तीसरे एवं बाहरवें का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ से चार–दस के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में बुध दुसरे भाव में मकर राशि का साथ स्थिति है और लग्नेश से 5/9 के अक्ष में है। दशानाथ से चार–दस के अक्ष में है।

केतु में आने वाली ये आखरी दशा है। आखरी अन्तर्दशा को दशा छिद्र कहते है। अगर पहले की दशाओं में थोड़ा स्वस्थ्य बाधित था तो इन दशाओं में भी थोड़ा ध्यान रखना होगा क्यूंकि बुध त्रिदोष देने वाला गृह है, थोड़ा अवश्य ध्यान दे। इन दशाओं में आप अपने बुद्धिबल और हिम्मत से आगे बढ़ेंगे। यहाँ कार्यक्षेत्र में कोई विशेष परेशानी नहीं होगी, थोड़ी मानसिक परेशानी संभव है। कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त होगा। विदेश आना–जाना हो सकता है। धन–धन्य से सम्बंधित परेशानी नहीं होगी। जीवनसाथी एवं संतान के प्रति व्यवहार को अनुकुल रखने का प्रयास करना होगा। नए कार्य या व्यवसाय की तरफ झुकाव हो सकता है।

शुक्र में शुक्र की अन्तर्दशा – 16–12–2048 से 16–04–2052

जातिका की उम्र यहाँ 41 साल के आसपास होगी।

शुक्र जातिका की पत्रिका में चतुर्थ एवं एकादश भाव का स्वामी होकर नवम भाव में षष्ठेश और नवमेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतीयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है।

नवांश पत्रिका में शुक्र द्वादश भाव में वृश्चिक राशि का स्थित है और लग्नेश से 3/11 के अक्ष में है।

केतु की दशाओं के बाद आपकी शुक्र की दशाएं प्रारम्भ हो जाएंगी। इन दशाओं का आपके व्यवहार एवं अचार–विचार पर प्रभाव पड़ेगा। जहाँ केतु की दशाओं में आप चिड़चिड़ापन महसूस करती थी वही इन दशाओं में सोच में सकारात्मकता और मन में इच्छाएं जागृत होंगी। शुक्र में शुक्र की दशाओं में हम साधारण फलों की उम्मीद रखेंगे। धन–धान्य की प्राप्ति होगी। नए घर–वाहन आदि की प्राप्ति संभव है। लाभ में निरंतरता बनी रहेगी। आधुनिक उपयोग की वस्तुओं पर ज्यादा ध्यान होगा। घर का रेनोवेशन आदि का कार्य भी भी करवा सकती है। यहाँ अपने ऊपर भी ध्यान देना पसंद करेंगी। जीवन साथी का सहयोग मिलता रहेगा। इन दशाओं में

कामनाओं की बृद्धि होगी एवं सबों के साथ मिलकर आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत रहेंगी। पति के कार्य आदि में तरक्की होगी। आप विलासिता पर अधिक धन खर्च करेंगी। कार्य क्षेत्र में विशेष तरक्की एवं धन प्राप्ति की विशेष संभावना है साथ ही पैत्रिक संपत्ति का लाभ होगा। किसी नए कार्य या व्यवसाय की भी सोच सकती हैं।सांसारिक सुख–भोगों की ओर रूचि अधिक होगी ।

शुक्र में सूर्य की अन्तर्दशा – 16–04–2052 से 17–04–2053

जातिका की उम्र यहाँ 42 साल के आसपास होगी।

सूर्य दुसरे भाव का स्वामी होकर दशम भाव में अपनी उच्च राशि का स्थित है। सूर्य किसी भी ग्रह से युत एवं दृष्ट नहीं है। तथा लग्नेश और दशानाथ से दूसरा स्थित है ।

नवांश पत्रिका में सूर्य अपनी सिंह राशि का नवम में लग्नेश चन्द्रमा से बारहवां स्थित है और दशानाथ से चार–दस के अक्ष में है।

इन दशाओं में आपके जीवन में अनुशासन बढ़ेगा। परिवार एवं परिवार के सभी सदस्यों के साथ–साथ रिश्तेदारों के साथ भी अनुकुल माहौल रहेगा। आप अपने बच्चों एवं जीवनसाथी से भी एक अनुशासित जीवन की कामना रखेंगी। इन दशाओं में कार्य क्षेत्र में विशेष तरक्की या बढ़ोतरी की संभावनाएं हैं। मान–सम्मान, प्रतिष्ठा, पद आदि पर विशेष ध्यान आकर्षित होगा । सरकार से सम्मान एवं सहयोग प्राप्त होगा । यहाँ सरकारी क्षेत्र में भी झुकाव हो सकता है। बच्चों के लिए समय अनुकुल है। बच्चे भी अपनी पढ़ाई–लिखाई में बेहतर परिणाम देंगे। अपने व्यस्त जीवन के कारण हो सकता है की आप घर पर कम समय व्यतीत करें। लाभ प्राप्ति की ओर अग्रसर रहेंगे। सरकार से धनागम या पैत्रिक संपत्ति का पूरा लाभ मिलेगा। यहाँ आपकी साढ़ेसाती भी प्रारम्भ हो जाएगी,जिस कारण थोड़ा मन परेशान हो सकता है। या काम बनने में देरी हो सकती है। स्वस्थ्य उत्तम रहेगा। अपना योग–व्यायाम निरन्तर करती रहें।

शुक्र में चन्द्रमा की अन्तर्दशा – 17–04–2053 से 16–12–2054

जातिका की उम्र यहाँ 44 आसपास होगी।

चन्द्रमा जातिका की पत्रिका में लग्न का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और त्रित्येष बुध, पंचमेश एवं दशमेश मंगल, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ के साथ है।

नवांश पत्रिका में चन्द्रमा दसम भाव में स्थिति है। नवांश में चन्द्रमा दशानाथ से 3/11 के अक्ष में है।

शुक्र की दशाओं के कारण मन में भरपूर इच्छाएं होंगी और कार्यक्षेत्र में व्यस्तता के कारण आप घर–परिवार में कम समय दे पाएंगी, जिस कारण मन में व्याकुलता हो सकती है। साढ़ेसाती का प्रभाव भी सीधा मन पर ही पड़ेगा। यहाँ मन में कामनाओं को व्यवस्थित करके चलना होगा।

नए–नए विचारों का समावेश होगा। अपने मनोनुकूल कार्य करना चाहेंगी। यात्रा आदि की संभावना हो सकती है। माता का सहयोग मिलेगा। माता से मिलना–जुलना बढ़ेगा और आप उनकी मदद करना चाहेंगी । माता के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना होगा। भाग्य का साथ आपको हमेशा रहेगा।

इन दशाओं में इमोशन की अधिकता होगी। यहाँ खर्च की भी अधिकता होगी । निवेश आदि का भी लाभ मिल सकता है, इस ओर भी ध्यान आकर्षित होगा। मन में उतार–चढ़ाव कार्य को लेकर होता रहेगा। आप मनोनुकुल कार्य करना चाहेंगे और सफलता भी प्राप्त करेंगे। नींद में परेशानी हो तो घ्यान–प्राणायाम आदि का सहारा लेना चहिए।

शुक्र में मंगल की अन्तर्दशा – 16–12–2054 से 16–02–2056

जातिका की उम्र जहाँ 45 के आसपास होगी।

मंगल जातिका की पत्रिका में पंचम एवं दशम का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतीयेश बुध, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ के साथ स्थित है।

नवांश पत्रिका में मंगल चतुर्थ भाव में मीन राशि का गुरु के साथ स्थिति है और लग्नेश से सातवां दशानाथ से पंचम–नवम का सम्बन्ध में है।

इन दशाओं में स्वभाव में एग्रेशन आने की संभावना है आप किसी भी विषय को तर्क के साथ समझने का विशेष प्रयास करेंगी। युवा उत्साह एवं युवाओं के साथ मिलकर काम को विशेष जोश के साथ करेंगी। यहां भाग्य का भी साथ मिलेगा एवं कार्य व्यवसाय में तरक्की होगी । छोटे भाई–बहनों का भरपुर सहयोग प्राप्त होगा लकिन यहाँ भाई–बहनो के साथ किसी भी तरह के विवाद से बचें। मन की परेशानी से कभी–कभी आप ऊँचे स्वर में बोल सकती है। बच्चों तरफ से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। बच्चों के स्वस्थ्य का थोड़ा ध्यान दे लेकिन अधिक चिंता की आवश्यकता नहीं होगी। जल्दबाजी से बचें। कार्य क्षेत्र में कोई परेशानी नहीं होगी। सहकर्मियों के अनबन हो सकती है। किसी के साथ वाद–विवाद न हो। वाहन का प्रयोग सावधानी से करें । ज्वर आदि पीड़ा हो तो चिकित्सक से मिलें। पति से अधिक समय गुजारने का मन होगा ऐसा नहीं होने पर मन में परेशानी हो सकती है।

शुक्र में राहू की अन्तर्दशा – 16–02–2056 से 15–02–2059

जातिका की उम्र यहाँ 48 साल के आसपास होगी।

राहु जातिका की पत्रिका में धनु राशि का छठे स्थान में स्थित है। राहु छठे व नवम दोनों भाव का फल करेगा। लग्नेश से चार–दस के अक्ष में है और दशानाथ से सातवां है। नवांश पत्रिका में राहु पंचम भाव में मेष राशि का स्थित है।

नवांश में लग्नेश से 6/8 के अक्ष में है और दशानाथ से 6/8 के अक्ष में है।

इन दशाओं में भाग्य का साथ मिलेगा और अपनी योजनाओं पर काम करने का प्रयास करेंगी। मन में बुलंदियां छूने की और अधिक इच्छा होगी और आये दिन नए–नए विचार मन में आते रहेंगे। आप अपने विचारों को अपने बच्चों एवं जीवन साथी से साझा भी करेंगी और उनसे राय लेना पसंद करेंगी। अगर व्यवसाय में है तो प्रतियोगियों का सामना भी करना पड़ सकता है। इन दशाओं कार्यक्षेत्र में भागदौड़ बढ़ सकती है। भागदौड़ के कारण आराम की कमी रहेगी और स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है क्यूंकि बीच–बीच में आने वाली प्रतयन्तर दशाएं भी प्रभाव डालेंगी। जीवन साथी से कभी–कभी अनबन संभव है। वाणी भी प्रभावित होगी। धर्म क्षेत्र में भी अपना विशेष योगदान देना चाहेंगी। कार्य सही हो या गलत आप हर कार्य को करना चाहेंगी। यहां बल और बुद्धि दोनों का समावेश होगा लेकिन कार्य से संतुष्टि नहीं प्राप्त होगी ।इन दशाओं में यात्रा का भी योग बनता है। यहां घुमने–फिरने का कार्यक्रम होगा ।

शुक्र में गुरु की अन्तर्दशा – 15–02–2059 से 16–10–2061

जातिका की उम्र यहाँ 51 साल के आसपास होगी।

गुरु जातिका की पत्रिका में छठे एवं नवम भाव का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतीयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है और दशानाथ के साथ है।

नवांश पत्रिका में गुरु चतुर्थ भाव में मीन राशि का मंगल के साथ स्थित है और लग्नेश से सातवें में है और दशानाथ से पंचम–नवम का सम्बन्ध है।

पहले की दशाओं में जितनी भागदौड़ थी यहाँ आपकी भागदौड़ कम होगी और आप सभी कार्यों को शांति पूर्ण ढंग से निपटना चाहेंगी। कार्यक्षेत्र में भी अधिक भागदौड़ नहीं होगी और आप आराम से कार्यों को अंजाम देंगी। यहाँ धन खर्च धार्मिक कार्यों या दूसरों की सहायता में भी हो सकता है। आप किसी संस्था को भी डोनेशन आदि दे सकती हैं। जीवन साथी से भी सहयोग मिलेगा। बच्चो की अपने क्षेत्र में तरक्की होगी। लाभ की निरंतरता बानी रहेगी। परिवार वालों से भी मेल–जोल बढ़ेगा। आप धार्मिक शिक्षा भी ले सकती है। इन दशाओं में ज्ञानपूर्वक काम को करना पसंद करेंगी। अपने से अनुभवी लोगों का सहयोग एवं साथ चाहेंगी । अपने धार्मिक कार्यों को अपनी पूरी क्षमता के साथ करना चाहेंगी। गुरु, ब्राह्मणों एवं सज्जनों का आदर एवं सहायता करेंगी। बच्चों का अधिक ध्यान रखेंगी। बच्चों के भविष्य के लिए विशेष निर्णय लेने का समय है यहां भी सोच–समझकर ही निर्णय लेंगी। इन सभी कार्यों के बीच मांगलकि कार्य आदि होने या उसमें शामिल होने का अवसर प्राप्त होगा। मन धार्मिक कार्य या सेवा कार्य में लगा रहेगा ।

शुक्र में शनि की अन्तर्दशा – 16–10–2061 से 16–12–2064

जातिका की उम्र यहाँ 53 साल के आसपास होगी।

शनि आपकी पत्रिका में सप्तमेश व अष्टमेश होकर तीसरे भाव में कन्या राशि का स्थित है। एवं नवम भाव में स्थित मंगल, बुध, गुरु, अशुभ चंद्र एवं शुक्र से दृष्ट है। दशानाथ से चतुर्थ और लग्नेश से सप्तम है।

नवांश पत्रिका में शनि सप्तम मिथुन राशि का स्थित है। दशानाथ से 6/8 का सम्बन्ध है और लग्नेश से 4/10 का सम्बन्ध है।

शुक्र आपको अपनी कामनाओं के पीछे भागने पर मजबूर करेगा, वही शनि स्वाभाव वश अशुभ ग्रह है और उसकी गति भी धीमी है। इन दशाओं में कार्य की गति या परिणामों की प्राप्ति में विलम्भ संभव है। भाई से सम्बंधित भी किसी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है लेकिन उसका समाधान भी मिलेगा। यहाँ भाई की तरक्की में विलम्ब हो सकता है। छोटे कर्मचारियों एवं लोगो से मेलजोल बढ़ेगा। आप सभी का सहयोग करेंगी। इन दशाओं में आलस्य की अधिकता हो सकती है जिस कारण मन परेशान है। कार्यक्षेत्र में ज्यादा हिम्मत से काम लेना होगा। कार्य में परिवर्तन की सम्भावना भी है। आपके जीवन साथी आपकी हिम्मत बनकर आपके साथ खड़े रहेंगे लेकिन यहाँ स्वास्थ्य का भी ध्यान दें। यहां सघर्ष करना पड़े साथ ही काम विलम्ब से पुरा हो, इसका हमेशा दबाव भी रहेगा। भाई–बहनों का सुख एवं सहयोग मिलेगा । यहाँ सरकारी कार्यों में भी भागदौड़ रहेगी और विलम्ब भी संभव है। किसी भी बड़े कार्य को करने से पहले सलाह अवश्य ले। इन दशाओं में छोटी–मोटी यात्राएं भी करनी पड़ सकती है। घर से बाहर भी रहना हो सकता है। संतान भी अपने कार्यक्षेत्र में व्यस्त रहेगी। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना जरूरी है ।

शुक्र में बुध की अन्तर्दशा – 16–12–2064 से 17–10–2067

जातिका की उम्र यहाँ 57 के आसपास होगी।

बुध जातिका की पत्रिका में तीसरे एवं बाहरवें का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ और लग्नेश के साथ स्थित है।

नवांश पत्रिका में बुध दुसरे भाव में मकर राशि का साथ स्थिति है और लग्नेश से 5/9 के अक्ष में है। दशानाथ से तीन–ग्यारह के अक्ष में है।

इन दशाओं में आपकी हिम्मत और बुद्धिमत्ता से कार्यों को गति मिलेगी एवं भाई का जीवन भी पहले से ज्यादा बेहतर होगा। यहां आप किसी भी तरह के धार्मिक अध्ययन या किसी नए विषय की पढ़ाई भी संभव है। यहां बच्चों के साथ बैठकर बात करने का समय है जहां आप उनके भविष्य आदि की बात कर सकती हैं। मित्रों के साथ मेल–जोल बढ़ सकता है। वाणी प्रभावशाली होगी यदि अपना व्यापार आदि हो तो उसमें विशेष तरक्की होने की संभावना है। यहां शिक्षण संस्थान आदि के कार्यों की सोच सकती हैं या वहां के कार्यक्रमों में हिस्सा लेने

का अवसर प्राप्त हो सकता है । अगर सरकारी क्षेत्र में है तो नयी नीतियों पर कार्य कर सकती है। कला आदि के क्षेत्र में रूचि बढ़ेगी। यहाँ धन का व्यय यात्राओं पर या किसी की सहायता के लिए हो सकता है। अगर शनि की दशाओं स्वस्थ्य से सम्बंधित कोई परेशानी थी तो इन दशाओं में भी ध्यान दें एवं निरन्तर चिकित्सकीय जाँच कराती रहें।

शुक्र में केतु की अन्तर्दशा का फल – 17–10–2067 से 16–12–2068

जातिका की उम्र यहाँ 58 साल के आसपास होगी।

केतु पत्रिका में द्वादश भाव में मिथुन राशि का स्थित है और मंगल एवं केतु से दृष्ट है। केतु द्वादश व तीसरे दोनों का फल करेगा। लग्नेश और दशानाथ से चार–दस के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में केतु एकादश भाव में तुला राशि का स्थित है। लग्नेश चंद्र से 2/12 के अक्ष में है और दशानाथ से दो–बारह के अक्ष में है।

यह शुक्र की महादशा में आखरी अन्तर्दशा है और इसे हम दशा छिद्र कहते है। आखरी दशा स्वाभाव वश थोड़ी परेशानी दे सकती है। केतु मन में चिड़चिड़ाहट उतपन्न करता है। स्वास्थ्य में परेशानी हो सकती है और मन में भ्रम की स्थिति हो सकती है। कार्यक्षेत्र में भी भागदौड़ बढ़ेगी। आपके व्यव्हार से दूसरों को परेशानी हो सकती है। विदेश यात्राएं भी संभव है। केतु लग्न से बाहरवां होने और शनि दृष्ट होने के कारण स्वस्थ्य में परेशानी दे सकता है। अपने स्वभाव के उपर नियंत्रण रखें एवं व्यवहार को संतुलित रखने का प्रयास करें। स्वास्थ्य का तो ध्यान रखना ही है साथ ही अनेक प्रकार की छोटी–बड़ी परेशानी एवं मानसिक व्यथा से गुजरना पड़ सकता है। यहां कार्य एवं व्यवसाय पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा लेकिन सहयोगियों या कर्मचारियों के विरोध का भी सामना करना पड़ सकता है। बच्चों के सेहत का भी ध्यान रखना होगा । इस समय विशेष संघर्ष करना पड़ेगा। पति के कार्य के साथ–साथ व्यवहार में उतार–चढ़ाव दिखेगा ।

सूर्य में सूर्य की अन्तर्दशा – 16–12–2068 से 04–04–2069

जातिका की उम्र यहाँ 58 साल के आसपास होगी।

सूर्य दुसरे भाव का स्वामी होकर दशम भाव में अपनी उच्च राशि का स्थित है। सूर्य किसी भी ग्रह से युत एवं दृष्ट नहीं है तथा लग्नेश से दूसरा स्थित है।

नवांश पत्रिका में सूर्य अपनी सिंह राशि का नवम भाव में लग्नेश चन्द्रमा से बारहवें स्थान में स्थित है।

शुक्र की महादशा के बाद सूर्य की महादशा प्रारम्भ होगी। इन दशाओं में सबसे पहले आपके व्यवहार एवं प्रकृति पर प्रभाव पड़ेगा। जहाँ शुक्र की दशा में आप आरामदेह जीवन और ऐशोआराम परंद करती थी वही सूर्य की दशाएं में ज्यादा उत्साह होगा, हिम्मत बढ़ेगी और अनुशासन में भी

वृद्धि होगी। सूर्य में सूर्य की दशाओं में कोई विशेष परिणाम प्राप्त नहीं होगा यहाँ आपका व्यवहार परिवर्तित होगा। यह अन्तर्दशा सिर्फ तीन महीनों की है यहाँ विशेष बदलाव महसूस करेंगी।

सूर्य में चन्द्रमा की अन्तर्दशा– 04–04–2069 से 04–10–2069

जातिका की उम्र यहाँ 59 आसपास होगी।

चन्द्रमा जातिका की पत्रिका में लग्न का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतीयेश बुध, पंचमेश एवं दशमेश मंगल, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ से दो–बारह के अक्ष में है। नवांश पत्रिका में चन्द्रमा दसम भाव में सूर्य से दूसरे भाव में स्थित है।

आपके अंदर जोश के साथ–साथ भावनात्मकता भी होगी। जहाँ मन में बुलंदी होगी वहीं एक अज्ञात भय से मन व्याकुल भी रह सकता है। आप अपने चारों तरफ हसीं–खुशी का माहौल चाहेंगी। भावुकता में उतार–चढ़ाव भी रहेगा। मन के अनुसार ही काम करना पसंद करेंगी। मान–सम्मान प्राप्त करना चाहेगी। जातिका के सामर्थ्य का विकास होगा। मन की बुलंदी के साथ काम करना पसंद करेंगी लेकिन इसमें सफलता नहीं मिलेगा। कार्य–व्यवसाय में परिवर्तन, विस्तार के साथ तरक्की की संभावना है । घर वाहन एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होगा। दशा अनुकुल रहेगा और पारिवारिक माहौल को खुशनुमा रखने का प्रयास करेंगी अपने लिए लोगों से ज्यादा समय चाहेंगी ऐसा न होने पर दु:खी हो सकती हैं।

सूर्य में मंगल की अन्तर्दशा – 04–10–2069 से 09–02–2070

जातिका की उम्र जहाँ 59–60 के आसपास होगी।

मंगल जातिका की पत्रिका में पंचम एवं दशम का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतीयेश बुध, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ से दा –बारह के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में मंगल चतुर्थ भाव में मीन राशि का गुरु के साथ स्थिति है और लग्नेश से सातवां और दशानाथ से 6/8 के अक्ष में है।

यहाँ आपके अंदर जोश पहले से भी ज्यादा होगा। आप अपने कार्य के प्रति हमेशा की तरह और भी ज्यादा सजग होंगी। आप अगर सरकारी क्षेत्र से जुड़ी हैं तो सूर्य की सम्पूर्ण दशा आपके लिए लाभकारी होंगी। आप ज्यादा सजकता से अपने कार्यों को लेंगी और एक अच्छे पद पर कार्यरत होंगी। इन दशाओं में आप उच्च पद पर कार्यरत भी हो सकती है। यहाँ आपको जीवन साथी के स्वास्थ्य का ध्यान देना होगा क्यूंकि मंगल की दृष्टि सप्तमेश शनि पर है और मंगल गुरु के साथ भी है। यहाँ आपको अपने सहयोगियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। भाई से अनबन संभव है। प्रॉपर्टी आदि की खरीद या बिक्री हो सकती है। आपकी संतान अपने क्षेत्र में

सफल होंगी। बच्चों का साथ आपको अपने कार्यक्षेत्र से लेकर घर–परिवार के सभी मामलों में मिलता रहेगा।

सूर्य में राहू की अन्तर्दशा – 09–02–2070 से 04–01–2071

जातिका की उम्र यहाँ 61 साल के आसपास होगी।

राहु जातिका की पत्रिका में धनु राशि का छठे स्थान में स्थित है। राहु छठे व नवम दोनों भाव का फल करेगा। लग्नेश से चार–दस के अक्ष में है और दशानाथ से पंचम–नवम के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में राहु पंचम भाव में मेष राशि का स्थित है। नवांश में लग्नेश से 6/8 और दशानाथ से पंचम–नवम के अक्ष में है।

राहु की दशाओं में आपको संतान का सहयोग भी अपने कार्य में प्राप्त हो सकता है। इन दशाओं में आप अपने क्षेत्र में नयी–नयी नीतियों पर कार्यरत रहेंगी। यहाँ आप एक सफल सलाहकार की भूमिका निभा सकती है। कार्यक्षेत्र से लेकर घर–परिवार वाले सभी आपसे सलाह लेना चाहेंगे। आप बच्चों के साथ भी नयी योजनाओं पर कार्य कर सकती है। जीवन में समय की कमी महसूस करेंगी। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान दें। राहु मन को ज्यादा व्यस्त रखेगा तो हो सकता है की आप अपने भी स्वास्थ्य का ध्यान न दे सकें। यहाँ स्वस्थ्य का ध्यान रखना अनिवार्य समझें।

सूर्य में गुरु की अन्तर्दशा – 04–01–2071 से 23–10–2071

जातिका की उम्र यहाँ 61 साल के आसपास होगी।

गुरु जातिका की पत्रिका में छठे एवं नवम भाव का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है और दशानाथ के साथ है।

नवांश पत्रिका में गुरु चतुर्थ भाव में मीन राशि का मंगल के साथ स्थित है और लग्नेश से सातवें भाव में है और दशानाथ से 6/8 का सम्बन्ध भाग्य का तो साथ आपको हमेशा ही मिलेगा। इन दशाओं में आपकी रूचि धर्म क्षेत्र में बढ़ सकती है। धार्मिक यात्रा भी संभव है। बच्चों के साथ भी व्यस्तता बढ़ेगी। आप अपने कार्यक्षेत्र के साथ–साथ समाज सेवा में भी अग्रसर रहेंगी। पति के साथ वक्त बिताना चाहेंगी। सभी लोग आपका साथ चाहेंगे। अपने धार्मिक कार्यों को अपनी पूरी क्षमता के साथ करना चाहेंगी। गुरु, ब्राह्मणों एवं सज्जनों का आदर एवं सहायता करेंगी। बच्चों के भविष्य के लिए विशेष निर्णय लेने का समय है, इन सभी कार्यों के बीच मांगलकि कार्य आदि होने या उसमें शामिल होने का अवसर प्राप्त होगा। मन धार्मिक कार्य या सेवा कार्य में लगा रहेगा।

सूर्य में शनि की अन्तर्दशा – 23–10–2071 से 04–10–2072

जातिका की उम्र यहाँ 62 साल के आसपास होगी।

शनि आपकी पत्रिका में सप्तमेश व अष्टमेश होकर तीसरे भाव में कन्या राशि का स्थित है। एवं नवम भाव में स्थित मंगल, बुध, गुरु, अशुभ चंद्र एवं शुक्र से दृष्ट है। दशानाथ से छठा और लग्नेश से सप्तम है।

नवांश पत्रिका में शनि सप्तम मिथुन राशि का स्थित है। दशानाथ से 3/11 और लग्नेश से 4/10 के अक्ष में है।

इन दशाओं में भागदौड़ एवं कोई परेशानी सामने आ सकती है। परेशानी कार्यक्षेत्र सम्बंधित भी हो सकती है या यूँ कहे की काम के सम्बन्ध में भागदौड़ हो सकती है। यहाँ आपको जीवन साथी के स्वास्थ्य का ध्यान देना होगा। अचानक कोई परेशानी आ सकती है जिससे आपका मन परेशान होगा। आपका स्वास्थ्य भी बाधित हो सकता है उसके बाद भी आप हिम्मत से काम लेंगी और सारी परिस्थितियों को संभाल लेंगी। बच्चों को भी थोड़ी बहुत पारिवारिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य मं बुध की अन्तर्दशा – 04–10–2072 से 10–08–2073

जातिका की उम्र यहाँ 63 के आसपास होगी।

बुध जातिका की पत्रिका में तीसरे एवं बाहरवें का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है। एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ से बाहरवां और लग्नेश के साथ स्थित है।

नवांश पत्रिका में बुध दुसरे भाव में मकर राशि का साथ स्थिति है और लग्नेश से पांचवां और दशानाथ दोनों से 6/8 के अक्ष में है।

पिछली दशाओं में आयी परेशनियाँ यहाँ कम होंगी और आप पुस्तकों या बागवानी में समय बिताना पसंद कर सकती है। आप कंसल्टैंसी में भी रूचि ले सकती है। आपकी हिम्मत में कही कोई कमी दिखाई नहीं देगी। मिटिंग्स आदि में आपको सम्मान के साथ आमंत्रित किया जाएगा। आपका विदेश में यात्राओं का सिलसिला जारी रहेगा। बच्चों को उनके कार्यक्षेत्र में सलाह देना चाहेंगी। उनके कार्यों में रूचि लेंगी। धन का व्यय स्वस्थ्य के सम्बन्ध में या घूमने में हो सकता है।

सूर्य में केतु की अन्तर्दशा का फल से 10–08–2073 से 16–12–2073

जातिका की उम्र यहाँ 63 साल के आसपास होगी।

केतु पत्रिका में द्वादश भाव में मिथुन राशि का स्थित है और मंगल एवं केतु से दृष्ट है। केतु द्वादश व तीसरे दोनों का फल करेगा। लग्नेश से चार–दस के अक्ष में है और दशानाथ से तीन–ग्यारह के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में केतु एकादश भाव में तुला राशि का स्थित है। लग्नेश से दूसरे और दशानाथ से तीन –ग्यारह के अक्ष में है।

दोनों ही अशुभ ग्रहों की दशा है और केतु तीसरे और बाहरवें का फल करेगा। इन दशाओं में कार्य से मन हट सकता है। स्वाभाव में अधिक एग्रेशन आ सकता है। इन दशाओं स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ सकता हैं छोटे लोग बात नहीं सुनेंगे तो विशेष मन को दुःख होगा। यहां पेट की समस्या हो सकती है। बच्चों के उपर आश्रित न हों मन में यही भावना होगी अपना काम स्वयं ही करना पसंद करेंगी। यहां अपने उपर ही विशेष देना उचित होगा । परिवार के कामों में कम से कम सुझाव व सलाह दें ।

सूर्य में शुक्र की अन्तर्दशा – 16–12–2073 से 16–12–2074

जातिका की उम्र यहाँ 64 साल के आसपास होगी।

शुक्र जातिका की पत्रिका में चतुर्थ एवं एकादश भाव का स्वामी होकर नवम भाव में षष्ठेश और नवमेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतीयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। लग्नेश के साथ और दशानाथ से बाहरवां है।

नवांश पत्रिका में शुक्र द्वादश भाव में वृश्चिक राशि का स्थित है और लग्नेश से तीसरा और दशानाथ दोनों से चार–दस के अक्ष में है।

यह सूर्य में आखरी अन्तर्दशा है यह कार्य से सम्मान के साथ रिटायरमेंट की दशा है। विपुल धन की प्राप्ति हो सकती है। सरकार से धन एवं सम्मान प्राप्ति की सम्भावना है। पैत्रिक संपत्ति की खरीद–विक्री हो सकती है। स्वास्थ्य में लाभ मिलेगा एवं मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगी । खाने–पीने की आदतों में विशेष ध्यान देना चाहिए। सांसारिक सुखों की ओर विशेष ध्यान आकर्षित होगा । धन–धान्य के लिए समय अनुकुल है मान, प्रतिष्ठा आदि भी मिलने की संभावना है ।

चन्द्रमा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा– 16–12–2074 से 17–10–2075

जातिका की उम्र यहाँ 65 आसपास होगी।

चन्द्रमा जातिका की पत्रिका में लग्न का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतीयेश बुध, पंचमेश एवं दशमेश मंगल, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है।

नवांश पत्रिका में चन्द्रमा दसम भाव में साथ स्थित है।

इन दशाओं में आपका झुकाव धर्म क्षेत्र की तरफ हो सकता है। इन दशाओं में भावुकता की अधिकता होगी। आप स्वयं प्रसन्न रहने का प्रयास करेंगी और दूसरों को भी प्रसन्न रखने का प्रयास करेंगी और उनकी हर संभव मदद भी करेंगी। कभी अकेले रहने का मन होगा तो कभी बच्चों के साथ समय बिताने का। इस अवस्था में कार्य के क्षेत्र में कुछ न कुछ बदलाव या कुछ नया करती रहेंगी। कार्य घर से ही करना परंद करेंगी। जयादा भागदौड़ नहीं चाहेंगी। संतान की ओर से अब निश्चिन्तता होगी। संतान की तरक्की होगी साथ ही परिवार के लोग भी आदर सम्मान करेंगे। मन भावुक रहेगा किसी भी तरह मनोनुकुल बातें न होने पर उदास हो सकती हैं। नींद में परेशानी हो सकती है साथ ही मन में अज्ञात भय भी हो सकता है ।

चन्द्रमा में मंगल की अन्तर्दशा– 17–10–2075 से 17–05–2076

जातिका की उम्र जहाँ 67 के आसपास होगी।

मंगल जातिका की पत्रिका में पंचम एवं दशम का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतयेश बुध, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ के साथ स्थित है ।

नवांश पत्रिका में मंगल चतुर्थ भाव में मीन राशि का गुरु के साथ स्थिति है और दशानाथ से सातवें स्थान में है।

इन दशाओं में आपके अंदर थोड़ा उत्साह होगा लकिन इमोशंस की मात्रा अधिक होगी। इमोशन और एग्रेशन दोनों का समावेश स्वाभाव में होगा। अगर बच्चे आपकी बात न सुने या कार्य मनोनुकूल न हो तो किसी की भी छोटी बात पर गुस्सा आ सकता है। भाई से मिलना जुलना होगा। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद से बचें। वाहन का प्रयोग सावधानी से करें । ज्वर आदि पीड़ा हो तो चिकित्सक से मिलें। बच्चों के जीवन में तरक्की होगी।

चन्द्रमा में राहू की अन्तर्दशा– 17–05–2076 से 16–11–2077

जातिका की उम्र यहाँ 67 साल के आसपास होगी।

राहु जातिका की पत्रिका में धनु राशि का छठे स्थान में स्थित है। राहु छठे व नवम दोनों भाव का फल करेगा। लग्नेश से चार–दस के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में राहु पंचम भाव में मेष राशि का स्थित है। नवांश में दशानाथ से 6/8 के अक्ष में है।

मन में दुविधा उतपन्न हो सकती है। आप बच्चों का साथ देना चाहेंगी और उनकी हर संभव सहायता करेंगी। यहाँ मन में एक डर की स्थिति हो सकती है अपने स्वस्थ्य का ध्यान देना

होगा। इन दशाओं में कार्य से ज्यादा होने ऊपर ध्यान दे। अगर अभी भी कार्य में संलग्न है तो आप एक सलाहकार की भूमिका निभा सकती है। घूमने –फिरने का मन होगा। धर्म क्षेत्र में रूचि हो सकती है। यहाँ मन अशांत रहेगा। नए–नए विचार मन में आते–जाते रहेंगे। धर्म क्षेत्र में भी अपना विशेष योगदान देना चाहेंगी। आप अपने आपको किसी न किसी कार्य में हमेशा व्यस्त रखना चाहेंगी। मन में उथल–पुथल से स्वास्थ्य बाधित रह सकता है। समय पर खाने .पीने का ध्यान दें।

चन्द्रमा में गुरु की अन्तर्दशा– 16–11–2077 से 18–03–2079

जातिका की उम्र यहाँ 69 साल के आसपास होगी।

गुरु जातिका की पत्रिका में छठे एवं नवम भाव का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है और दशानाथ के साथ है।

नवांश पत्रिका में गुरु चतुर्थ भाव में मीन राशि का मंगल के साथ स्थित है और दशानाथ से सप्तम भाव में है ।

मन में प्रभु भक्ति जागृत होगी। हर कदम दूसरों की सहायता करेंगी। सभी लोग आपका आदर करेंगे और आपकी सलाह लेना पसंद करेंगे। इन दशाओं में आप स्वं खुश रहने तथा दूसरों को खुश रखने का प्रयास करेंगी। सूक्ष्म व्यायाम करती रहेंगी। आप अपने अनुसार धन को खर्च करने का प्रयास करेंगे। धन दान एवं धार्मिक कार्यों में भी खर्च हो सकता है। छोटे बच्चों के साथ अधिक समय बिताना पसंद करेंगी तथा बच्चों की शिक्षा आदि की बात बताऐंगी। माता पिता की तरह ही धार्मिक कार्यों में सहयोग करेंगी। धार्मिक यात्रा आदि का आनंद मिलेगा साथ धार्मिक कार्यों के आयोजन आदि में भाग लेंगी । घर में मांगलिक कार्य आदि होने की संभावना है। परिवार के सभी लोग आपको विशेष आदर करेंगे। पेट से संबंधित समस्यओं से परेशानी हो सकती है ।

चन्द्रमा में शनि की अन्तर्दशा– 18–03–2079 से 16–10–2080

जातिका की उम्र यहाँ 70 साल के आसपास होगी।

शनि आपकी पत्रिका में सप्तमेश व अष्टमेश होकर तीसरे भाव में कन्या राशि का स्थित है। एवं नवम भाव में स्थित मंगल, बुध, गुरु, अशुभ चंद्र एवं शुक्र से दृष्ट है। दशानाथ से सप्तम है।

नवांश पत्रिका में शनि सप्तम मिथुन राशि का स्थित है। दशानाथ से 4/10 के अक्ष में है।

शनि स्वभाववश एक क्रूर ग्रह है और अपनी दशाओं में थोड़ी परेशानी देता ही है। इन दशाओं में आलस्य की अधिकता होगी। अपने नित्य कर्म को भी विलम्ब से कर सकती है। स्वास्थ्य में भी परेशानी हो सकती है साथ ही जोड़ों आदि में दर्द हो सकता है । यहां लंबी बीमारियों से परेशानी हो सकती है। मित्रों से मेल–जोल कम होगा। अपने रिश्तेदारों से विवाद आदि की भी

संभावना है। खाने–पीने में अरूचि होगी। मानसिक पीड़ा बढ़ सकती है इससे बचना होगा। इस समय आपकी तीसरी साढ़ेसाती भी चल रही होगी। यहाँ आपके साथ –साथ बच्चों को भी परेशानी है। स्वयं एवं पति के के स्वास्थ्य का ध्यान रखना जरूरी है।

चन्द्रमा में बुध की अन्तर्दशा– 16–10–2080 से 17–03–2082

जातिका की उम्र यहाँ 72 के आसपास होगी।

बुध जातिका की पत्रिका में तीसरे एवं बाहरवें का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ के साथ स्थित है।

नवांश पत्रिका में बुध दुसरे भाव में मकर राशि का साथ स्थिति है और दशानाथ से 5/9 के अक्ष में है।

इन दशाओं में भी स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना होगा। बुध तीनो दोषों को देने वाला ग्रह है इसीलिए यहाँ विशेष सावधानी की आवश्यकता है। फिर भी पहली दशाओं से ये दशाएं कुछ बेहतर होंगी। यहाँ आप पुस्तकों आदि में समय व्यतीत कर सकती है। यहां छोटे बच्चों के साथ बैठकर बात करने का समय है और उनको मार्गदर्शन भी देना चाहेंगी। बच्चों से उनके भविष्य से जुड़े कार्य–व्यवसाय की बात जानना चाहेंगीं। धार्मिक या शिक्षण संसथान आदि के प्रोग्राम में अतिथि की भूमिका निभा सकती है। वहां के कार्यक्रमों में हिस्सा लेने का अवसर प्राप्त हो। अपने बच्चों को अपने सभी बातें बताना चाहेंगी एवं उनसे उम्मीद करेंगी कि वो भी आपकी तरह उदार एवं सुसंस्कृत रहें ।

चन्द्रमा में केतु की अन्तर्दशा का फल– 17–03–2082 से 16–10–2082

जातिका की उम्र यहाँ 72 साल के आसपास होगी।

केतु पत्रिका में द्वादश भाव में मिथुन राशि का स्थित है और मंगल एवं केतु से दृष्ट है। केतु द्वादश व तीसरे दोनों का फल करेगा। दशानाथ से चार–दस के अक्ष में है।

नवांश पत्रिका में केतु एकादश भाव में तुला राशि का स्थित है। दशानाथ से दो–बारह के अक्ष में है।

इन दशाओं में भी मानसिक स्थिति कुछ अच्छी नहीं कहेंगे। मन में आये दिन परेशानियां होंगी। दुसरे आपको समझ नहीं पाएंगे। आप अपने हिसाब से ही चलना चाहेंगी। सबसे पहले तो अपने स्वभाव के उपर नियंत्रण रखें एवं व्यवहार को संतुलित रखने का प्रयास करें। स्वास्थ्य का तो ध्यान रखना ही है साथ ही अनेक प्रकार की छोटी–बड़ी परेशानी एवं मानसिक व्यथा से गुजरना पड़ सकता है। बच्चों के सेहत का भी ध्यान रखना होगा। इन दशाओं स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ सकता है। छोटे लोग बात नहीं सुनेंगे तो विशेष मन को दुःख होगा। इंफेक्शन आदि की समस्या हो सकती है। यहां पेट की समस्या हो सकती है। बच्चों के उपर आश्रित न हों मन में

यही भावना होगी अपना काम स्वयं ही करना पसंद करेंगी। बच्चों के व्यवहार में बदलाव से भी मन परेशान हो सकता है। यहां अपने उपर ही विशेष देना उचित होगा। परिवार के कामों में कम से कम सुझाव व सलाह दें।

चन्द्रमा में शुक्र की अन्तर्दशा– 16–10–2082 से 16–06–2084

जातिका की उम्र यहाँ 74–75 साल के आसपास होगी।

शुक्र जातिका की पत्रिका में चतुर्थ एवं एकादश भाव का स्वामी होकर नवम भाव में षष्ठेश और नवमेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतीयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशानाथ के साथ स्थित है।

नवांश पत्रिका में शुक्र द्वादश भाव में वृश्चिक राशि का स्थित है और दशानाथ से 3/11 के अक्ष में है।

इन दशाओं में थोड़ी प्रसन्नता होगी और आप घूमना–फिरना चाहेंगी। घर की साज–सज्जा में भी रूचि ले सकती है। अच्छे तैयार होकर रहने का मन हो सकता है। मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगी। बच्चों के साथ धूमने–फिरने का मन होगा। यहाँ आरामदायक जीवन जीने की इच्छा होगी। धन–धान्य के लिए समय अनुकुल है आपके किसी पुराने निवेश का लाभ बच्चों को मिल सकता है। सभी से मान सम्मान पाने की इच्छा होगी। घर परिवार वालों के लिए समय अनुकूल है। किसी समारोह में सम्मलित हो सकती है। यहाँ स्वास्थ्य भी अनुकूल रहेगा। फिर भी लापरवाही न बरतें।

चन्द्रमा में सूर्य की अन्तर्दशा– 16–06–2084 से 16–12–2084

जातिका की उम्र यहाँ 75 साल के आसपास होगी।

सूर्य दुसरे भाव का स्वामी होकर दशम भाव में अपनी उच्च राशि का स्थित है। सूर्य किसी भी ग्रह से युत एवं दृष्ट नहीं है। दशानाथ से दूसरा स्थित है।

नवांश पत्रिका में सूर्य अपनी सिंह राशि का नवम में दशानाथ चन्द्रमा बारहवें भाव में स्थित है।

आपका सूर्य बलवान होने के कारण आप हमेशा से ही अनुशासित पहले से ही थी और उम्र के इस पड़ाव पर भी आपके अंदर जोश की कमी नहीं होगी परन्तु स्वास्थ्य कभी–कभी बाधित हो सकता है जिसके कारणवश उत्साह गुस्से में बदल सकता है। हर काम मनोनुसार और नियम से करना चाहेंगी। सभी को हो सकता है ये बात पसंद न आये। आप अपने बच्चों से भी अनुशासन में रहने की उम्मीद रखेंगी। अधिक बोलने एवं तेज बोलने की आदत हो सकती है । अपने एवं अपने पुरूखों की कहानियां सबको बताती रहेंगी। अपने गुजरे हुए समय को

विशेष याद करेंगी। अपनी इच्छा होगी कि अपने पुराने घर–मकान आदि की मरम्मत आदि करवायी जाय। सूर्य लग्न का कारक है इसलिए स्वास्थ्य का ध्यान रखना जरूरी है। आपको सरकार से सम्मान भी प्राप्त हो सकता है।

मंगल की दशा– 16–12–2084 से 16–12–2091

आगे आपकी मंगल की दशाओं में आप अपने बच्चों पर आश्रित हो सकती है। इन दशाओं में शरीर में कमजोरी, मानसिक विचलन आदि की परेशानी हो सकती है। हमेशा अपने आप को सुदृढ़ रखने का प्रयास करेंगी। इन दशाओं से विशेष स्वास्थ्य का ध्यान रखना है परिवार वालों से मिलने और बाते करने की इच्छा हमेशा मन में रहेंगी। आगे की संपूर्ण मंगल की दशाओं में हम आपको स्वस्थ्य का विशेष ध्यान रखने की सलाह देंगे। ज्यादा से ज्यादा समय परिवार के साथ गुजारे। अपने बच्चों को उनके उज्जवल भविष्य के लिए प्रेरणा दे। अपना समय इन दशाओं में पुस्तकें पड़ने में व्यतीत कर सकती है। कही आते–जाते समय सावधानी बरतें। चलने–फिरने में सावधानी रखें। ज्यादा से ज्यादा समय बच्चों के साथ गुजारें। स्वाभाव में बेवजह की उग्रता से बचें। यहाँ योग आदि का सहारा लेना उचित नहीं होगा आप धीमें कदमों से घुमना–फिरना जारी रख सकती हैं। किसी भी तरह की अनबन से बचें। बात–बात पर स्वाभाव में आये परिवर्तन से परिवारजनों को पीड़ा स्वाभाविक है। यहाँ आप मानसम्मान चाहेंगी और सभी आपको मानसम्मान देंगे भी परन्तु वाणी में सौम्यता बरतें।

स्वास्थ्य विवरण

लग्न में कर्क राशि स्थित है लग्नेश चन्द्रमा नवम भाव में शनि से दृष्ट है और मंगल, बुध, गुरु और शुक्र के साथ है। लग्न के कारक ग्रह सूर्य दशम भाव में स्थित है और किसी भी अशुभ प्रभाव से वंचित है। लग्नेश और कारक दोनों ही अपनी बलवान स्थिति में है।

नवांश पत्रिका में लग्नेश दसम भाव में कन्या राशि का स्थित है। नवांश में भी दोनों स्थिति अच्छी कहेंगे। नवांश पत्रिका में सूर्य अपने ही राशि का नवम भाव में स्थित है। यहाँ लग्न, लग्नेश और कारक की स्तिथि अच्छी कही जाएगी।

लग्न, लग्नेश और कारक को देखने के बाद हमें चन्द्रमा को भी देखना चाहिए इससे जातिका के मानसिक स्वस्थ्य का बोध होगा। चन्द्रमा आपकी पत्रिका में स्वयं लग्नेश होकर बलवान है, इसीलिए मानसिक रूप से भी आप मजबूत होंगी। शनि की दृष्टि से कभी–कभी परेशानी हो सकती है। मन में हमेशा आशंका बनी रहेगी संभव हो कि घबराहट आदि की संभावना हो सकती है।

विशेष रोगादि के लिए छठे, आठवें एवं बारहवें भाव एवं उसके स्वामी को देखा जाता है। छठे का स्वामी नवम में स्थित है और अष्टम भाव का स्वामी तीसरे में स्तिथ है और द्वादश भाव का स्वामी भी नवम में ही स्थित है। स्वास्थ्य के दृष्टि से पत्रिका उत्तम है कोई विशेष परेशानी दिखाई नहीं देती और थोड़ी–बहुत परेशानी आप सँभालने में सक्षम है। स्वास्थ्य संबंधी छोटी–मोटी समस्या हो सकती है । गर्मी, पित्त आदि से संबंधित बीमारी से सावधानी की जरूरत है। पेट आदि की समस्या का भी ध्यान रखना है बढ़ते उम्र में पेट की समस्या से परेशान हो सकते हैं।

नीचे दी गयी कुछ दशाओं मं सावधानी की जरूरत है–

शनि में राहु की अन्तर्दशा – 30–07 –2019 से 05–06–2022

जातिका की उम्र यहाँ 12 साल के आसपास होगी।

राहु जातिका की पत्रिका में धनु राशि का छठे स्थान में स्थित है। राहु छठे व नवम दोनों भाव का फल करेगा। लग्नेश और दशानाथ दोनों से चार–दस के अक्ष में है ।

यहाँ दोनों अशुभ ग्रह है और राहू छठे का भी फल करना चाहेगा इसीलिए यहाँ सावधानी बरतनी होगी। कुछ समय बाद आपकी साढ़ेसाती भी प्रारम्भ हो जाएगी जिसके कारण मन परेशान हो सकता है। यहाँ योग आदि का सहारा लें। पेट से संबंधित पीड़ा हो तो चिकित्सक आदि का सलाह लें ।

उपाय–

सूर्य की उपासना यहां से प्रारंभ कर लेना चाहिए ।

शनि में गुरु की अन्तर्दशा– 05–06–2022 से 16–12–2024

जातिका की उम्र यहाँ 14–15 साल के आसपास होगी।

गुरु जातिका की पत्रिका में छठे एवं नवम भाव का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, पंचमेश और दशमेश मंगल, लग्नेश चन्द्रमा, द्वादशेश और तृतयेश बुध के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है और दशानाथ से सप्तम

यह शनि की महादशा में आने वाली आखरी दशा है। आखरी दशा को दशछिद्र कहते है। इन दशाओं में थोड़ी सावधानी की आवश्यकता होगी। शनि का चन्द्रमा पर प्रभाव मन को प्रभावित करेगा।

खान–पान आदि का विशेष ध्यान रखें । एवं सूर्य की उपासना करती रहें ।

केतु की सम्पूर्ण दशाएं –

केतु पत्रिका में द्वादश भाव में मिथुन राशि का स्थित है और मंगल एवं केतु से दृष्ट है। केतु द्वादश व तीसरे दोनों का फल करेगा। लग्नेश चंद्र से चार–दस के अक्ष में है।

केतु मन में चिड़चिड़ापन देगा और क्यूंकि द्वादश भाव में शनि से दृष्ट है तो स्वस्थ्य सम्बन्धी परेशानी हो सकती है। यहाँ गले और कंधे से सम्बंधित परेशानी हो सकती है। व्यव्हार में आया परिवर्तन बड़ी परेशानी बन सकता है। इन सम्पूर्ण दशाओं में सावधानी की आवश्यक्ता होगी।

उपाय –

केतु की दशा प्रारंभ होने से पूर्व ही महामृत्यूंजय का जप करवाना जरूरी समझें ।

शुक्र में राहू की अन्तर्दशा– 16–02–2056 से 15–02–2059

जातिका की उम्र यहाँ 50 साल के आसपास होगी।

राहु जातिका की पत्रिका में धनु राशि का छठे स्थान में स्थित है। राहु छठे व नवम दोनों भाव का फल करेगा। लग्नेश से चार–दस के अक्ष में है और दशानाथ से सातवां है।

यहां पेट की समस्या अधिक हो सकती है इसलिए पूर्व से ही ध्यान रखना जरूरी है और आगे इस बात को विशेष ध्यान रखें ।

नीचे लिखे मंत्रों को नित्य जपना प्रारंभ करें यदि पेट से संबंधित परेशानी विशेष परेशान करे –

पाशयेद्यो नरो मंत्रं नृसिंहध्यानमाचरेत् ।

तस्यरोगा प्रणश्यन्ति ये च स्युः कुक्षिसम्भवा ।।

शुक्र में शनि की अन्तर्दशा– 16–10–2061 से 16–12–2064

जातिका की उम्र यहाँ 54 साल के आसपास होगी।

शनि आपकी पत्रिका में सप्तमेश व अष्टमेश होकर तीसरे भाव में कन्या राशि का स्थित है। एवं नवम भाव में स्थित मंगल, बुध, गुरु, अशुभ चंद्र एवं शुक्र से दृष्ट है। दशानाथ से चतुर्थ और लग्नेश से सप्तम है।

युरिन से संबंधित परेशनी हो सकती है यहां इस बात का ध्यान रखें ।

उपाय –

सर्वाबाधा विनिर्मुक्तौ..... ।

.....भविष्यति न संशयः ।। का पाठ करवाना चाहिए ।

शुक्र में केतु की अन्तर्दशा का फल – 17–10–2067 से 16–12–2068

जातिका की उम्र यहाँ 58 साल के आसपास होगी।

केतु पत्रिका में द्वादश भाव में मिथुन राशि का स्थित है और मंगल एवं केतु से दृष्ट है। केतु द्वादश व तीसरे दोनों का फल करेगा। लग्नेश और दशानाथ से चार–दस के अक्ष में है।

यहां मानसिक स्थिति को ही सिर्फ नियंत्रण में रखना है ।

सूर्य में शनि की अन्तर्दशा– 23–10–2071 से 04–10–2072

जातिका की उम्र यहाँ 63 साल के आसपास होगी।

शनि आपकी पत्रिका में सप्तमेश व अष्टमेश होकर तीसरे भाव में कन्या राशि का स्थित है। एवं नवम भाव में स्थित मंगल, बुध, गुरु, अशुभ चंद्र एवं शुक्र से दृष्ट है। दशानाथ से छठा और लग्नेश से सप्तम है।

चन्द्रमा की संपूर्ण दशा –

चन्द्रमा जातिका की पत्रिका में लग्न का स्वामी होकर नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतीयेश बुध, पंचमेश एवं दशमेश मंगल, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है।

इन दशाओं में थोड़ा–बहुत उतार–चढ़ाव आता रहेगा। क्यूंकि सारी दशाएं लग्नेश के सापेक्ष है और सबसे ज्यादा असर आपके मानसिक स्थिति पर होगा। और उम्र के इस पड़ाव पर मन शांत रहना बहुत आवश्यक है।

उपाय –

महामृत्यूंजय का जप प्रारंभ करवाना चाहिए ।

शिक्षा विवरण

चतुर्थ एवं पंचम स्थान से शिक्षा की बात होती है। चतुर्थ स्थान से बारहवी तक के शिक्षा की बात करनी चाहिए और आगे की शिक्षा के लिए ज्योतिष में पंचम भाव से विचार किया जाता है । बारहवीं भाव तक के शिक्षा के लिए बुध एवं आगे की शिक्षा के लिए गुरु को कारक मानकर पत्रिका का अवलोकन करना चाहिए ।

जातिका के चतुर्थ स्थान में तुला राशि स्थित है इस भाव के उपर सूर्य और मंगल की दृष्टि है एवं इस भाव का स्वामी नवम भाव में चंद्र, बुध, गुरु और मंगल के साथ स्थित है और शनि से दृष्ट भी है। चतुर्थ के स्थिर कारक चन्द्रमा स्वयं लग्नेश ही हैं। शिक्षा के लिए कारक बुध नवम भाव में चंद्रमा, बुध, गुरु और मंगल साथ स्थित है। जातिका कुशाग्र बुद्धि वाली एवं विषयों को जल्दी से ग्रहण करने वाली होगी। यहां जातिका की शनि की दशा चल रही है। शनि की दशाओं में पढ़ाई–लिखाई को सूक्ष्मता समझने का प्रयास करेंगी, कभी–कभी पड़े में आलस्य दिखा सकती है। एकाग्रचित होकर किसी भी विषय–वस्तु को समझती होगी। जातिका विषय–वस्तु को तर्क से समझना चाहेंगी। रटना जातक के स्वभाव में नहीं होगा तथा जिस भी

विषय को एक बार पढ़ेगा वह उन्हें हमेशा याद रहेगा । यहां मेधा शक्ति अच्छी होगी क्यूंकि सभी ग्रहों की स्थिति भी अच्छी है।

स्कूल में होने वाली एक्टिविटी में भी रूचि लती होंगी लकिन अभी शनि की दशाओं में ज्यादा भागदौड़ पसंद नहीं करेंगी यहाँ पेंटिंग या रिसर्च आदि सूक्षम्ता से किये जाने वाले अध्ययन में रूचि लेंगी। यहाँ गणित–विज्ञान या बायोलॉजी में रूचि हो सकती है। आर्ट एवं कला की ओर भी झुकाव होगा । बुध व्यवसायिक शिक्षा आदि भी करवा सकता है। जातिका 12 वीं कक्षा विज्ञान एवं गणित से ही पास करेगी । दसवीं एवं बारहवीं के रिजल्ट अपेक्षा के अनुकुल होंगे । 12 वीं की तैयारी के साथ ही अन्य प्रतियोगी परीक्षा आदि की तैयारी प्रारंभ कर लेंगी यहां जातिका आगामी बुध की दशाओं में उच्च शिक्षा की तैयारी में लग जाएंगी और अच्छी उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगी यहाँ उच्चा शिक्षा में कोई परेशनी नहीं होगी। उच्च शिक्षा मनेजमेंट,कंप्यूटर शिक्षा,बिजनेस एजुकेशन या एकाउंटेंसी के क्षेत्र में लेनी चाहिए। सूर्य पत्रिका में सबसे बलवान ग्रह है इसलिए इनकी रूचि सरकारी क्षेत्र में भी हो सकती है।

अर्थशास्त्र, डिजाईनिंग, आर्किटेक्ट आदि से करियर के लिए विशेष शिक्षा ग्रहण करना जरूरी है। ज्योतिष में भी रूचि हो सकती है । यहां सरकारी कार्यों से जीविकोपार्जन संभव है इसलिए शिक्षा के चयन करते समय इन बातों का ध्यान रखना जरूरी है ।

जातिका अपने करियर जीवन में भी आवश्यक्तानुसार विशेष शिक्षा या ट्रेनिंग आदि लेती रहेगी । जातिका को शिक्षा से संबंधित विशेष परेशानी आदि की बात नहीं कहेंगे ।

करियर रिपोर्ट

शिक्षा के आधार पर ही करियर का चुनाव संभव है। यहां जातिका फाइनेंसियल और इकोनोमिकल फील्ड में एडमिनिस्ट्रेटिव लेवल की शिक्षा ले सकती है या बिजनेस और मनेजमेंट की शिक्षा भी ले सकती है। यहां करियर निर्धारण के जो नियम ज्योतिष में बताए गए हैं उसके अनुसार लग्नेश, चन्द्रमा एवं सूर्य इन तीनों में सबसे बलवान हो उससे निर्धारित करना चाहिए । पत्रिका में सूर्य सबसे बलवान हैं इसलिए सूर्य से दसम स्थान में मकर राशि स्थित है और नवांश में शनि बुध की मिथुन राशि में स्थित है और दशा भी बुध की ही है इसलिए बुध की तरह काम आदि होने की संभावना है लेकिन सूर्य का दसम स्थान में होना सरकारी कार्यों में विशेष प्रगति दिखाता है ।

पराशरी सिद्धान्त कहता है कि पत्रिका में जो ग्रह सबसे अधिक बलवन हो उस ग्रह का प्रभाव हमारे जीवन के सभी पहलुओं पर होता है। यहां जातिका की पत्रिका में सूर्य सबसे बलवान ग्रह है इसलिए उपरोक्त बताई गई फील्ड में उच्च पद पर आशीन होंगी। यहाँ जातिका का झुकाव राजनीति में भी हो सकता है और अगर परिवार भी राजनीती से जुड़ा है तो निश्चय ही ऐसा होना संभव है।

यदि जातक किसी बड़े कंपनी में भी काम करेगी तो कंपनी के विस्तार आदि के लिए काम करने का अवसर प्राप्त होगा। जहां भी रहेगी प्रशासनिक पद की प्राप्ति होगी। काम के क्षेत्र में अपना नाम भी करेगी इस बात की संभावना भी पत्रिका दर्शाती है ।

नौकरी–पेशा में परेशानी होगी या सतत प्रगतिशील रहेंगी। अब इस बात का विचार करते हैं।

दसम स्थान में मेष राशि स्थित है जो यह बताती है कि जातिका किसी भी कार्य को पूरे उत्साह और ऊर्जा के साथ करना चाहेंगी। मेष राशि का स्वामी मंगल नवम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतयेश बुध, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है। एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। दशम भाव में सूर्य अपनी उच्च राशि में स्थित है और कोई भी शुभ–अशुभ दृष्टि से वंचित है। दसम के स्थिर कारक ग्रह बुध भी नवम भाव में दशमेश के साथ ही स्थित है। जातिका की पत्रिका में दशम भाव अच्छे योगों में शामिल है। दशा भी बुद्ध की ही है जो आपके कार्य के अनुकूल होगी। लग्न पत्रिका मे लग्नेश एवं दसमेश भी एक साथ नवम भाव में स्थित है एक साथ स्थित होने के कारण जातिका को कार्य करने का आनंद भी मिलेगा और आगे बढ़कर कार्य को करना चाहेंगी एवं भाग्य का साथ भी मिलता रहेगा। करियर के समय जीवन में सुख–सुविधाओं की कमी नहीं होगी। अपने कार्य काल में संसार के सभी सुख–भोग प्राप्त करेंगी।

कर्म के कारक ग्रह शनि पत्रिका में तीसरे भाव में स्थित हैं जातिका अपनी हिम्मत एवं पराक्रम से आगे बढ़ती रहेगी। इससे जातिका की कर्मठता का पता चलता है। कभी–कभी थोड़ा आलस्य स्वाभाव में हो सकता है। जातिका भागादौड़ी वाले कार्य से ज्यादा आरामदायक और उच्च पदस्त कार्य करना चाहेंगी। जातिका कभी भी कार्य से पीछा नहीं छुड़ाना चाहेंगी। शनि नवांश में सप्तम भाव में मित्र राशि का स्थित है।

नवांश पत्रिका–

नवांश पत्रिका में मंगल (लग्न पत्रिका का दशमेश) चतुर्थ भाव में मीन राशि गुरु के साथ स्थित है। नवांश पत्रिका में लग्न पत्रिका के लग्नेश एवं दसमेश एक दूसरे से समसप्तक में होने के कारण यहां यह दर्शाता है कि जातिका को थोड़ा उतार–चढ़ाव कुछ दशाओं में हो सकता है। यहाँ कोई ज्यादा परेशानी नहीं होगी ।

दशांश पत्रिका–

दशांश पत्रिका का लग्न कन्या राशि का है जो लग्न पत्रिका के तीसरे भाव की राशि है एवं दशांश का लग्नेश नवम में स्थित है। दशमांश पत्रिका के दशम में मिथुन राशि स्थित है और स्वामी बुध नवम में स्थित है। दसमांश में शनि अपनी उच्च राशि का दूसरे भाव में स्थित है एवं शनि से दसम स्थान में कर्क राशि है और कोई ग्रह स्थित नहीं है और चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। लग्न पत्रिका का दशमेश यानि मंगल दशमांश में द्वादश भाव में स्थित है। इसलिए यहां दसमांश पत्रिका भी कार्य एवं कार्यक्षेत्र में थोड़ी यानि नाममात्र की परेशानी दर्शाता है ।

पत्रिका किसी भी स्थिति में एक सम्मानित कार्य दर्शाता है। यहां दशम भाव में सूर्य की स्थिति मानसम्मान एवं ऐश्वर्य को भी दर्शाती है। दशा अनुकुल होने के कारण अपने मनोनुकुल कार्य को करने में सफल होगी ।

जातिका की पत्रिका में जोब और व्यवसाय की बात की जाय तो दोनों ही चुने जा सकते है यहाँ जातिका नौकरी छोड़ कर आगामी भविष्य में व्यवसाय भी कर सकती है या राजनीति में जा सकती है।

दशम भाव के स्वामी, दशम में स्तिथ ग्रह या दशम त्रिकोण के स्वामी या उनमे स्थित ग्रहों या दृष्टि डालने वाले ग्रहों में बलवान हो और समय अनुकूल हो तो पहली नौकरी मिल जाती है। यहाँ बुद्ध की महादशा में लगातार कुछ दशम को प्रभावित करने वाले ग्रहों की अन्तर्दशा में पहली जॉब मिल जायगी। यहाँ आप पढ़ाई के साथ–साथ भी जॉब कर सकती है। आगामी दशाओं में प्रगति के मार्ग खुलते रहेंगे और बुध की दशा की समाप्ति तक आपका करियर निश्चित हो जायेगा।

नीचे दी गयी कुछ दशाओं में आपके करियर के लिए महत्वपूर्ण होंगी। यहाँ आप अपने करियर में प्रगति का पहला मौका पाएंगी –

बुध में मंगल की अन्तर्दशा– 17–06–2033 से 14–06–2034

जातिका की उम्र जहाँ 24 के आसपास होगी।

बुध में राहू की अन्तर्दशा– 14–06–2034 से 31–12–2036

जातिका की उम्र यहाँ 26 साल के आसपास होगी।

बुध में गुरु की अन्तर्दशा– 31–12–2036 से 08–04–2039

जातिका की उम्र यहाँ 29 साल के आसपास होगी।

इन दशाओं में कार्य का प्रारंभ होना एवं तरक्की आदि की विशेष संभावना है ।

करियर को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाली दशाओं में केतु की ही दशाएं ऐसी है जो करियर में परेशानी ला सकती है। केतु द्वादश भाव में स्थित है और यह आपको व्याहारिक रूप से परेशान करेगा और क्यूंकि तीसरे का भी फल करेगा इसीलिए सहयोगियों से परेशनी है बाकि करियर में और कोई परेशानी नहीं दिखती है। इन दशाओं को सावधानी से निकलना चाहिए तथा एक ही जगह टिक कर काम करना चाहिए । सदैव अपने मन के उपर नियंत्रण रखना चाहिए ।

शुक्र की दशाओं में हम विशेष तरक्की की बात कहेंगे। शुक्र की दशाओं में आप करियर की उचाईयों पर होंगी और मानसम्मान प्राप्त करेंगी।

शुक्र की दशाओं में आने वाली कुछ योगकारी दशाएं –

शुक्र में सूर्य की अन्तर्दशा– 16–04–2052 से 17–04–2053

जातिका की उम्र यहाँ 43 साल के आसपास होगी।

शुक्र में मंगल की अन्तर्दशा– 16–12–2054 से 16–02–2056

जातिका की उम्र जहाँ 46 के आसपास होगी।

शुक्र में गुरु की अन्तर्दशा– 15–02–2059 से 16–10–2061

जातिका की उम्र यहाँ 51 साल के आसपास होगी।

सूर्य की दशाओं में आपको विशेष मानसम्मान और सलाहकार का उच्च पद प्राप्त होगा। सूर्य की सारी दशाओं में आप पूरे उत्साह साथ कार्यों को करना चाहेंगी अगर राजनीति में है विशेष सफलता मिलेगी।

वेल्थ रिपोर्ट

धनादि के लिए मूल रूप से धन स्थान एवं लाभ स्थान की बात होती है साथ धन एवं लाभ के स्वामी का अन्य ग्रहों से योग व राजयोग जीवन में कितना धन होगा इसको दर्शाता है। नवांश एवं होरा वर्ग चार्ट का भी अध्ययन करना चाहिए। विशेष धन को समझने के लिए लगन, पंचम, नवम व कारक गुरु यदि अच्छे स्थिति में हो तो धनादि की समस्या नहीं होती है तथा विपुल धन के लिए शुक्र को पत्रिका एवं नवांश चार्ट में सुक्ष्मता समझना चाहिए ।

धन भाव –

धन भाव में सिंह राशि स्थित है तथा धन भाव का स्वामी सूर्य दशम भाव में स्थित है और किसी ग्रह से युत या दृष्ट नहीं है। अपने कार्यक्षेत्र एवं सरकार से अच्छे धन होने का संकेत प्राप्त होता है। यहाँ कार्य क्षेत्र में पिता का सहयोग मिलता रहेगा।

स्थिर कारक गुरु भी नवम भाव में, मंगल, बुध, शुक्र और चंद्र के साथ है और शनि से दृष्ट है। पत्रिका में शुक्र भी नवम भाव में होने के कारण विपुल धन का संकेत भी प्राप्त होता है।

नवांश पत्रिका में धनेश, लाभेश एवं लग्नेश की स्थिति –

लगन पत्रिका का धनेश नवमांश पत्रिका में अपनी ही राशि का नवम भाव में स्थित है तथा लग्नेश चन्द्रमा भी धनेश के साथ दशम भाव में सिंह राशि का स्थित है। लाभेश शुक्र द्वादश भाव में वृश्चिक राशि का स्थित है। लग्नेश और धनेश नवांश में एक साथ है यहाँ धनेश एवं लग्नेश में से कोई भी नवांश में 6–8–12 भाव में नहीं गया है एवं एक दूसरे के साथ होने के कारण जातिका को जीवन में धनादि से संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या नहीं होगी।

त्रिकोण के स्वामियों की स्थिति–

पत्रिका में लग्नेश चन्द्रमा नवम भाव में स्तिथ है लग्नेश का नवम भाव में जाना भाग्यशाली होने का संकेत है। भाग्य का साथ हमे हमेशा मिलता रहेगा।

पंचम से हम अपने बुद्धि विवेक की बात करते है। बुद्धि–विवेक अच्छा होने से ही हम धन प्राप्त करने और उसके निवेश में रूचि रखते हैं और सतत धनप्राप्ति की आशा करते हैं। पत्रिका में पंचम भाव पर शनि और गुरु की दृष्टि है तथा पंचमेश लग्नेश के साथ नवम भाव में ही स्थित है। धन प्राप्ति और निवेश में आपको लाभ की प्राप्ति होती रहेगी।

नवम भाव से हम भाग्य की बात करते है। धन की प्राप्ति में भाग्य का साथ मिलना अति आवश्यक है। जातिका का भाग्येश भाग्य भाव में लग्नेश और पंचमेश के साथ स्तिथ है तथा शनि से दृष्ट है यहा त्रिकोण के स्वामियों का भाग्य स्थान में एक अच्छा योग है। लग्नेश, पंचमेश व भाग्येश में से कोई भी 6–8–12 में नहीं गया एवं विशेष अशुभ प्रभाव में नहीं होने के कारण धनागम निरंतर होता रहेगा एवं जीवन में कभी भी धन की कमी महसूस नहीं होगी।

होरा वर्गकुंडली का वर्णन –

होरा चार्ट को धन की स्थिति को गहराई से समझने के लिए देखा जाता है। स्त्री जातक के लिए कर्क का होरा अच्छा माना जाता है और शुक्र और चंद्र स्त्री कारक ग्रहों का कर्क में होना स्त्री जातिका की पत्रिका में अच्छा माना जाता है। आपकी होरा कुंडली में सिंह राशि का लग्न है और सभी ग्रह सिर्फ चन्द्रमा को छोड़ कर सिंह में ही स्थित है। पत्रिका को अच्छा कहेंगे। जातिका धनवान होंगी और जीवन में सभी सुखों को भोगने वाली होंगी ।

स्थिर धन –

स्थिर धन में हम घर, वाहन, प्रॉपर्टी, ज्वेलरी आदि की बात करेंगे। लाभ की निरंतरता को हम एकादश भाव से देखते है। आपकी पत्रिका में एकादश भाव एक मजबूत स्थिति में है लाभ से आया धन हम लोग या तो बैंक में रखते है या प्रॉपर्टी, सोने–चांदि आदि में निवेश करते है। बैंक में रखे धन जेवेलरी की बात हम दुसरे स्थान से करते है। आपकी पत्रिका में दुसरे भाव का सम्बन्ध दशम स्थान के साथ है और लाभ भाव का सम्बन्ध भाग्य भाव से है। यहाँ लाभ व धन दोनों भाव मजबूत स्थिति में है। दूसरा भाव दर्शाता है कि जातिका अपने कार्यक्षेत्र से काफी अर्जित करेंगी।

चतुर्थ भाव से हम घर, वाहन व प्रॉपर्टी आदि की स्थिति देखते है चतुर्थ भाव पर सूर्य एवं मंगल की दृष्टि है और चथुर्तेश शुक्र नवम भाव में स्थित है तथा कारक चन्द्रमा नवम भाव में स्थित है और शनि से दृष्ट है। चतुर्थेश शुक्र पर भी शनि की दृष्टि है। जातिका भूमि–भवन एवं अनेकों वाहनों का सुख भोगेंगी। पैतृक संपत्ति का लाभ भी जातिका को मिलेगा।

निवेश तथा निवेश का लाभ या हानि –

निवेश की स्थिति को समझना अति आवश्यक है। शेयर मार्किट, सोने–चांदि में निवेश तथा भविष्य की योजनाओं में निवेश का लाभ मिलेगा। यदि विदेश में प्रोपर्टी या अन्य निवेश करते हैं तो विशेष लाभ मिलेगा। निवेश करने में जल्दवाजी करने से बचना चाहिए। पंचम भाव से हम बड़े निवेश की बात करते है। पंचम भाव का स्वामी मंगल नवम भाव में लग्नेश चंद्र, चतुर्थेश और लाभेश शुक्र, तृतीयेश और द्वादशेश बुध और षष्ठेश और नवमेश गुरु के साथ स्थित है और शनि से दृष्ट है। पंचम भाव पर शनि और गुरु की दृष्टि है। व्यापार, शेयर मार्किट आदि में निवेश का विशेष लाभ प्राप्त होगा। पार्टनरशिप में निवेश करना हो तो कोई परेशानी नहीं होगी परन्तु जल्दबाजी से बचना होगा। आप किसी बड़े व्यापार से भी लाभ प्राप्त कर सकती है।

सामाजिक सुरक्षा हेतु पर्याप्त या अपर्याप्त धन –

आने वाले समय में सामाजिक सुरक्षा एवं बृद्धावस्था में उपयोग के लिये धन की स्थिति का बलवान होना जरुरी है। धन की मजबूत स्थिति से आप अपने मनोनुकूल सामाजिक सुरक्षा पा सकते है। आपकी पत्रिका में धन व लाभ की स्थिति अच्छी है। आप सामाजिक सुरक्षा हेतु धन का निवेश कर लाभ प्राप्त कर सकती है। जीवन के अंतिम समय तक धन से संबंधित किसी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा ।

धनवान या विपुल धन –

आपकी पत्रिका में धन के उत्तम योग है। धन के लिए जातिका को जीवन में किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होगी। स्वअर्जित धन का लाभ मिलेगा। सभी बातो का ध्यान रखते हुए हम आपको विपुल धनी कहेंगे। यहां धन के खर्च करने आदि की स्वतंत्रा प्राप्त होती है ।

विवाह और वैवाहिक विवरण

पंचम भाव से अन्य जानकारी के साथ–साथ विवाह पूर्व की बात अर्थात सगाई या प्रेम संबंध आदि को दर्शाता है। कुंडली में पंचम में वृश्चिक राशि है तथा पंचम का स्वामी मंगल है। पत्रिका में पंचम भाव का स्वामी नवम में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र, द्वादशेश और तृतीयेश बुध, लग्नेश चन्द्रमा, षष्टेश और भाग्येश गुरु के साथ स्थित है एवं तीसरे भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। पंचम भाव पर शनि और गुरु की दृष्टि है यहाँ हम कहेंगे की थोड़े बहुत परेशानियों के बाद पंचम से सम्बंधित परिणाम अच्छे प्राप्त होंगे। परिवार के सहयोग एवं सहमति से विवाह की बात पक्की होगी ।

जातिका का झुकाव प्रेम की ओर हो सकता है परन्तु जातिका का अपना मानसम्मान भी होगा और वो उसे हमेशा बरकरार रखना चाहेंगी। प्रेम विवाह के योग पत्रिका में कह सकते हैं। सप्तमेष का तीसरे स्थान में जाना एवं गुरु, बुध, चंद्र, शुक्र और मंगल से दृष्ट होने के कारण विवाह का सुख अच्छा कहेंगे और जीवनसाथी हमेशा आपकी हिम्मत बनकर आपके साथ खड़े रहेंगे। यहां जातिका प्रेम विवाह को अपने पैरेंट्स की मर्जी से करना चाहेंगी। आपकी कुंडली में पंचम भाव की स्तिथि उत्तम है इसलिए स्कूल, कॉलेज लाइफ में आपकी दोस्ती हो सकती है

यहाँ पंचम भाव की स्तिथि व पंचमेश के अन्य ग्रहों से सम्बन्धों को देखते हुए हम कहेंगे की यहाँ ज्यादा संभावनाये प्रेम विवाह की है। अगर आप प्रेम विवाह करती है तो वह सफल भी होगा और परिवार के लोगो का सहयोग भी प्राप्त होगा।

सप्तम भाव विवाह, वैवाहिक सुख आदि से सम्बन्ध रखता है। विवाह के दृष्टिकोण से कुंडली उत्तम है। सप्तम भाव में मकर राशि स्तिथ है और इसका स्वामी शनि तीसरे स्थान में गुरु, बुध ,चंद्र ,शुक्र और मंगल व से दृष्ट है। सप्तम भाव पर किसी भी ग्रह की दृष्टि नहीं है इसीलिए हम सप्तम भाव को अच्छा ही कहेंगे।

सप्तम एवं सप्तमेश का वैवाहिक जीवन पर प्रभाव–

सप्तमेश का तीसरे स्थान में जाना अच्छा है। जीवन साथी हमेशा हमारी हिम्मत बनकर हमारा साथ देंगे। यहाँ मंगल की दृष्टि थोड़े बहुत वाद–विवाद का संकेत देती है। यहाँ जीवनसाथी का समाज में अपना मान–सम्मान होगा।

कारक का वैवाहिक जीवन पर प्रभाव –

सप्तम के स्थिर कारक शुक्र जो सांसारिक सुख–भोगों के भी कारक कहे गए हैं और पति के लिए कारक गुरु होते है। शुक्र और गुरु दोनों नवम भाव में स्तिथ है और शनि से दृष्ट है। इसलिए जीवन में सांसारिक सुख–भोग की कमी नहीं होगी ।

पति के कारक गुरु का भाग्य स्थान में जाना एक अच्छे पद पर पद पर आशीन और सम्मानित जीवनसाथी का संकेत देता है। नवम भाव में गुरु का सभी भावेशों के साथ अच्छा योग है।

नवांश पत्रिका का आकलन –

नवमांश पत्रिका के लगन में धनु राशि स्तिथ है जो लगन पत्रिका के छठे स्थान की राशि है। धनु राशि का स्वामी गुरु चतुर्थ भाव में मीन राशि का स्तिथ है। नवांश पत्रिका के सप्तम में मिथुन राशि स्तिथ है जो लग्न पत्रिका के द्वादश भाव की राशि है और स्वामी दुसरे भाव में मकर राशि का स्तिथ है। लग्न और सप्तम में 6 और 12 की राशि का आना थोड़ा आपसी मतभेद दिखाता है। नवांश पत्रिका के लग्नेश एवं सप्तमेश का एक दुसरे से तीन–ग्यारह का सम्बन्ध रखते है।

लगन पत्रिका का सप्तमेश शनि और कारक गुरु की स्तिथि नवमांश पत्रिका में उत्तम है। लगन पत्रिका का सप्तमेश शनि नवांश पत्रिका में मिथुन राशि का सप्तम भाव में स्तिथ है। कारक गुरु चतुर्थ भाव में मीन राशि का स्तिथ है। लगन पत्रिका के सप्तमेश और कारक गुरु का एक दूसरे से चार/दस का सम्बन्ध है। इससे पता चलता है कि आपसी सामंजस्य एवं सहयोग एक दूसरे के लिए बना रहेगा एवं अपने वैवाहिक जीवन में पूर्ण आनंद की प्राप्ति होगी।

लग्न पत्रिका के सप्तम स्तिथ राशि एवं ग्रह तथा नवांश पत्रिका में लग्न में स्थित राशि व ग्रह से जीवन साथी के रंग–रूप, आचार–विचार आदि की बात बताते हैं।

सप्तम स्तिथ राशि व स्वामी से उनके कर्मठ होने का बोध होता है, आपके जीवन साथी ज्ञानवान, समझदार, दृढ़निश्चयी तथा कर्मठ होंगे। उनके विचार समय व परिस्तिथि के अनुसार बदलते रहेंगे। सरलता व उदारता उनके अंदर साफ दिखाई देगी। आपकी जीवन साथी हर संभव परिवार का साथ देंगे और आपकी हिम्मत बनकर आपके साथ रहेंगे। आपके साथ कंधे से कंधा मिलकर चलेंगे। कार्यक्षेत्र में भी आपको सहयोग करेंगे। कभी–कभी गुस्सा तेज आ सकता है इससे विचलित नहीं होना चाहिए।

आप दोनों के आपसी सम्बन्ध मधुर होंगे। वैवाहिक जीवन उत्साह से भरपुर होगा। दोनों ही एक दुसरे का सुख–दुःख के साथी होंगे। आपसी सम्बन्ध उम्र के हर पड़ाव पर अच्छे ही होंगे। सम्बन्धो में हमेशा मधुरता बनी रहेगी। आप दोनों के बीच प्रेम की कमी नहीं रहेगी। दोनों एक दुसरे की भावनाओं को समझेंगे। दोनों दिल से एक दुसरे से जुड़े रहेंगे। आपके पति उच्च पदस्त होंगे।

सप्तम के स्थिर कारक ग्रह शुक्र और पति के कारक गुरु दोना अच्छे स्थानों में होने से उनके समाज में मानसम्मान का बोध होता है। शनि के ऊपर मंगल को छोड़कर सभी शुभ ग्रहों की दृष्टि है। मंगल की दृष्टि होने से कभी–कभी स्वाभाव व बोलचाल में तेजी व कड़वाहट दिखाई देगा। आपकी पति आपके परिवार को आपने परिवार की तरह ही समझेंगे। सभी परिवारजनों का हर संभव सहयोग करेंगे।

संतान एवं संतान का सुख भी आपके जीवन में अच्छा है पति के सहयोग से संतान की ओर से आप निश्चिन्त रहेंगी। संतान की देख–भाल एवं उसके भविष्य की चिंता करेंगे। अपने उत्तरदायित्व से कभी पीछे नहीं हटेंगे।

बुध में गुरु की दशाओ तक आपका विवाह हो जाएगा। यह स्तिथि विवाह के सुख का संकेत देती है। यहाँ पति से सहयोग एवं के पिता का विशेष सहयता एवं सहयोग प्राप्त होगा। आगे आने वाली केतु की दशाओं में मन में चिड़चिड़ाहट आ सकती है यहाँ ध्यान दे।

विवाह के वर्षों का निर्धारण –

यहाँ निश्चित समय बताना संभव नहीं क्यूंकि यह देश, काल, परिस्तिथि और जातिका की शिक्षा पर भी निर्भर करता है। यहाँ उम्र के साथ–साथ ज्योतिष सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए कुछ उपयुक्त दशाओं का वर्णन किया जा रहा है।

बुध में राहू की अन्तर्दशा– 14–06–2034 से 31–12–2036

जातिका की उम्र यहाँ 26 साल के आसपास होगी।

राहु जातिका की पत्रिका में धनु राशि का छठे स्थान में स्थित है। राहु छठे व नवम दोनों भाव का फल करेगा। लग्नेश और दशानाथ दोनों से चार–दस के अक्ष में है।

राहु पत्रिका में गुरु का फल करेगा इसीलिए राहु की दशाओं में विवाह होने की सम्भावना होगी। इसके लिए हमे गोचर और भाव सिद्धि काल भी देखना होगा।

भाव सिद्धि काल का नियम –

लग्नेश जिस राशि में है उससे त्रिकोण में भावेश का होना या भावेश जिस राशि में है उससे त्रिकोण में लग्नेश का होना।

लग्नेश और भावेश का एक दुसरे से समसप्तक होना।

भावेश या लग्नेश जिस राशि में है उससे त्रिकोण में गुरु का होना।

भाव सिद्धिकाल नियम की पुष्टि –

जातिका का लग्नेश मीन राशि में स्थित है मीन राशि को लग्न मानकर देखे तो सप्तमेश शनि त्रिकोण में स्थित है। यहाँ गुरु की दृष्टि सप्तम भाव और सप्तमेश दोनों पर है।

बुध –राहु –गुरु– 1–11–2034 से 05–03 2035

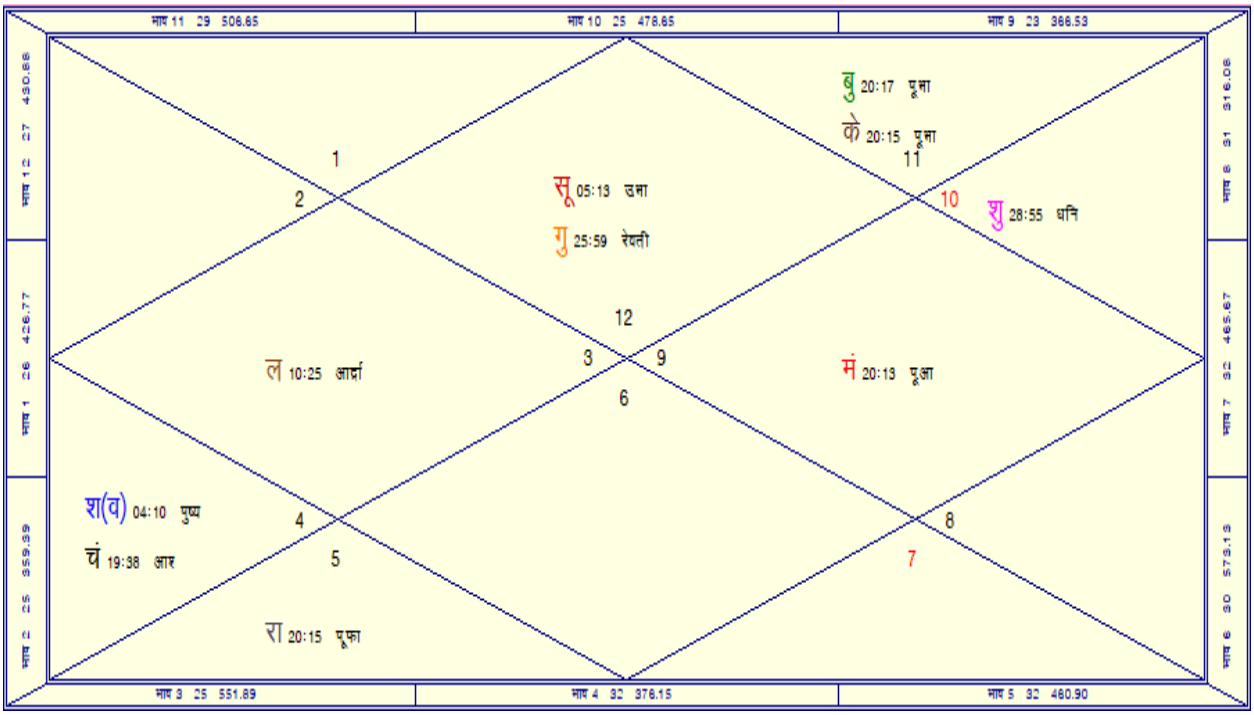

बुध–राहु –शुक्र– 02–02–2036 से 06–07–2036

भाव सिद्धिकाल नियम की पुष्टि –

जातिका का लग्नेश मीन राशि में स्थित है मीन राशि को लग्न मानकर देखे तो सप्तमेश शनि त्रिकोण में स्थित है। सप्तमेश लग्न पत्रिका में जिस राशि में है उससे त्रिकोण में गुरु है और यहाँ गुरु की दृष्टि सप्तम भाव पर भी है।

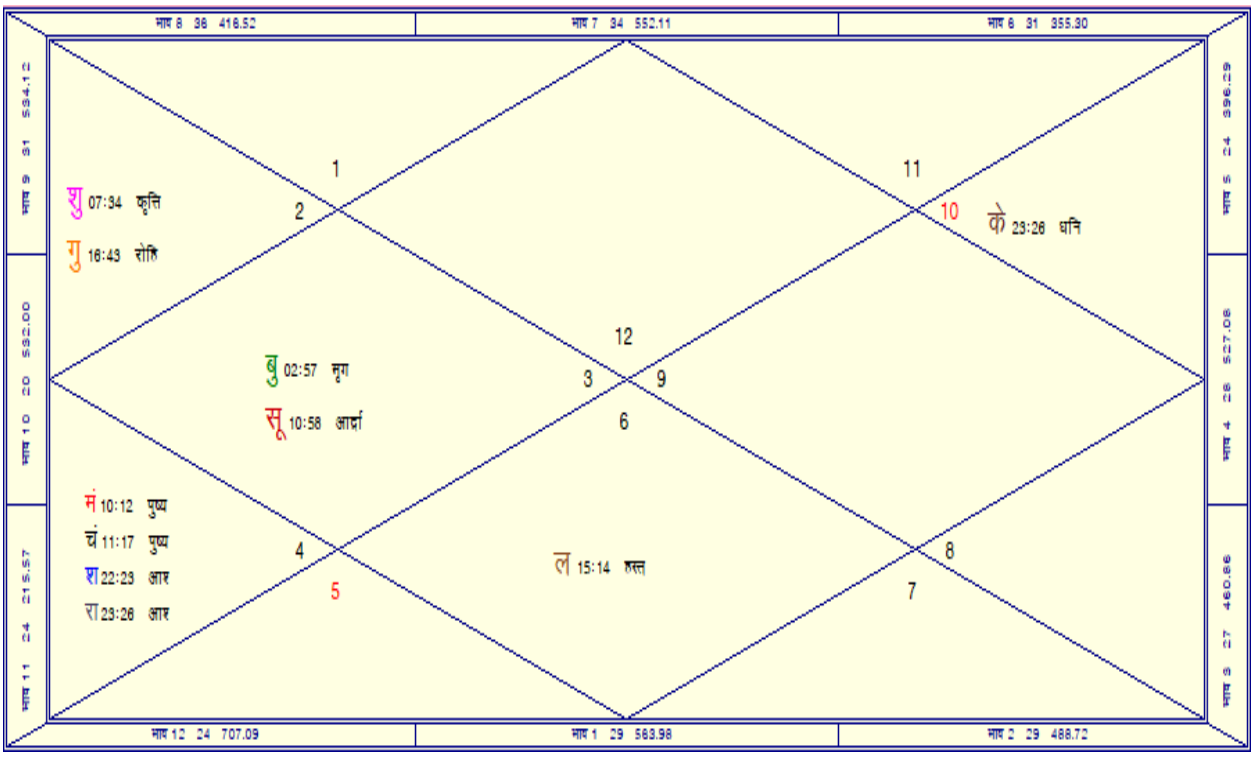

बुध –गुरु – 31–12–2036 8–4–2039 (Between Jan –mar2036)

भाव सिद्धिकाल नियम की पुष्टि

जन्म पत्रिका का सप्तमेश कन्या राशि में स्थित है और कन्या राशि से त्रिकोण में गुरु स्थित है। चंद्रराशि से सप्तमेश शनि का गोचर छठे में शुभ कहा गया है।

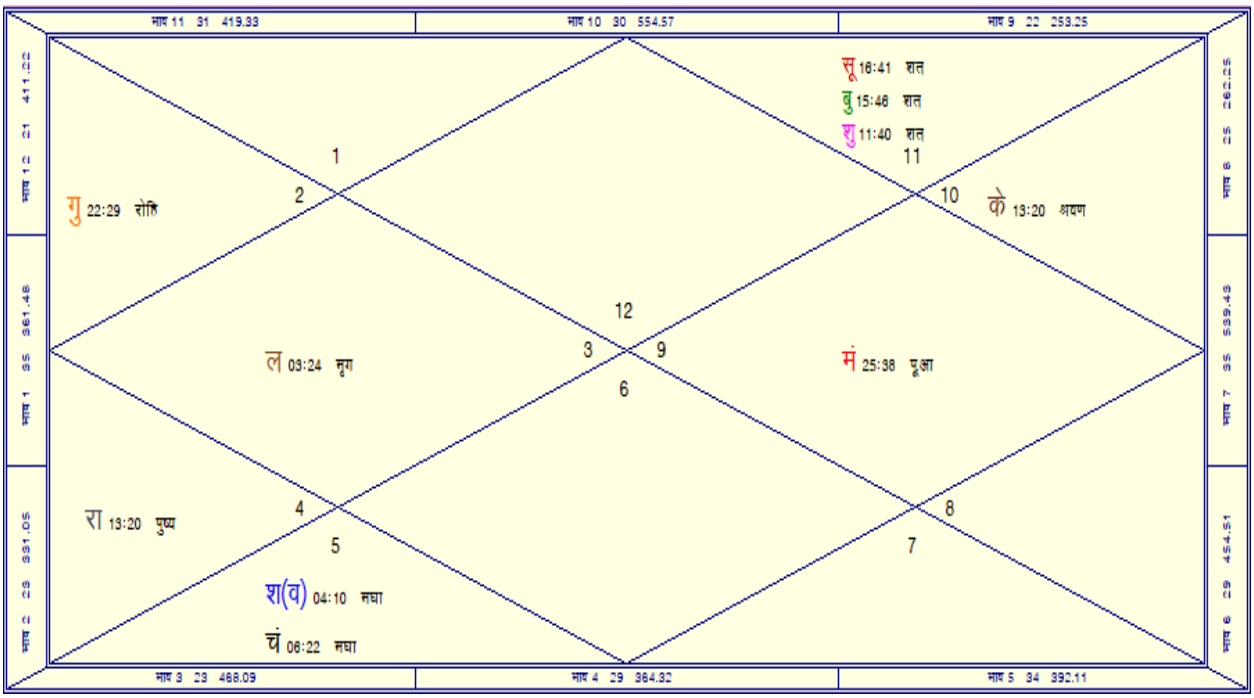

बुध –शनि – 8–4–2039 से 16–12–2041 (Nov.2039—Dec.—2040)

भाव सिद्धिकाल नियम की पुष्टि –

जातिका का लग्नेश मीन राशि में स्थित है मीन राशि को लग्न मानकर देखे तो सप्तमेश शनि और गुरु दोनों सप्तम भाव में एक साथ है। यहाँ गुरु का सप्तम गोचर भी शुभ कहा गया है।

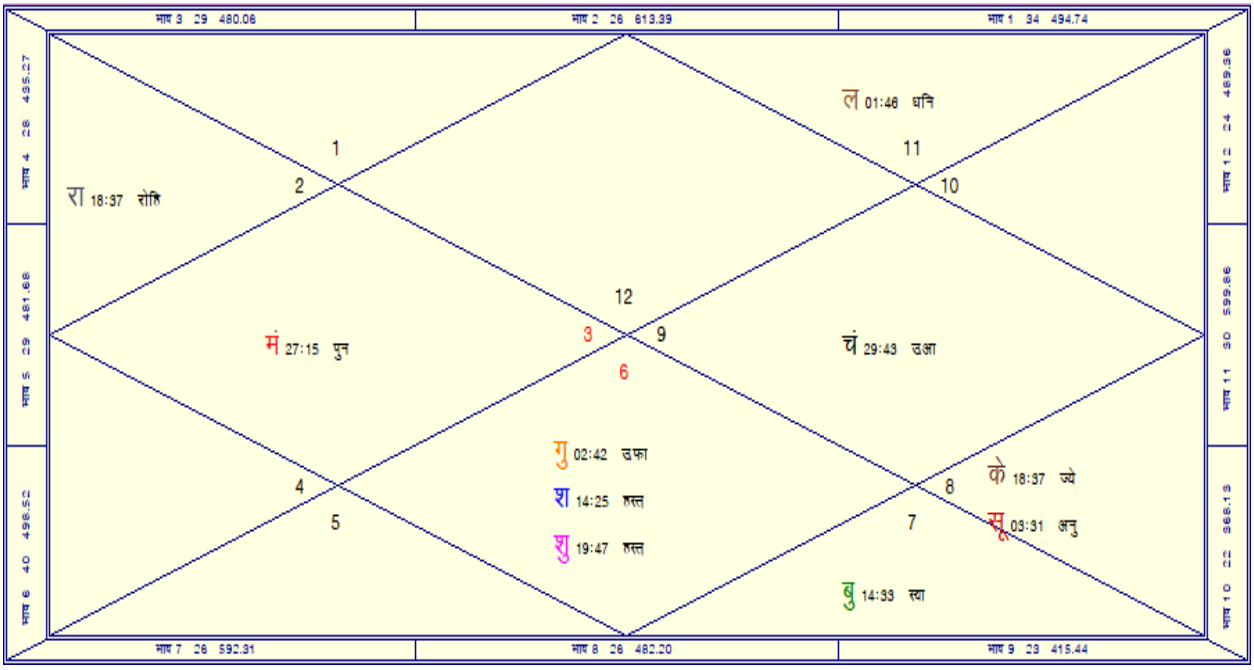

उपरोक्त बताई गयी दशाओं और भवसिद्धि के आलावा भी इन दशाओं में कई बार भाव सिद्धिकाल और गोचर से नियम की पुष्टि होती है।

माता–पिता

जन्म कुंडली का चतुर्थ भाव माता के लिये एवं नवम भाव पिता के लिए कहा गया है। चतुर्थ एवं नवम भाव को लग्न बनाकर तथा चन्द्रमा एवं सूर्य जहां स्थित हो उसको लग्न बनाकर भी माता एवं पिता के बारे में जाना जाता है। एक नियम और जिसमें कारक को प्रमुखता दी गयी है इसलिए चन्द्रमा से चतुर्थ एवं सूर्य से नवम स्थान को लग्न मानकर भी पिता एवं माता के के बारे में जानकारी प्राप्त होती है ।

चतुर्थ स्थान एवं माता का कारक ग्रह चन्द्रमा है। नवम स्थान तथा पिता का कारक ग्रह सूर्य होता है। कुंडली में सूर्य और चन्द्रमा के उपर प्रभाव को अच्छी तरह से समझकर ही निर्णय लेना चाहिए ।

पत्रिका में नवम भाव में मीन राशि है तथा नवम भाव में चंद्र ,शुक्र, मंगल, बुध और गुरु स्थित है एवं शनि की दृष्टि है। नवम भाव स्थित मीन राशि का स्वामी गुरु नवम भाव में ही स्थित है नवम भाव में नवमेश और कारक सूर्य दोनों अच्छी स्थिति में है। यहाँ सूर्य के ऊपर कोई शुभ या अशुभ दृष्टि नहीं है और नवम भाव पर शनि की दृष्टि पिता के स्वस्थ्य में थोड़ी परेशानी बताती है। जातक के लग्नेश चंद्र और पिता के कारक सूर्य का एक दुसरे से दो–बारह का सम्बन्ध है इस कारण पिता से धन प्राप्ति की सम्भावना है।

सूर्य से पिता एवं चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है इसलिए इसको नवांश कुंडली में भी देख लेना चाहिए। नवांश कुंडली में सूर्य नवम भाव में सिंह राशि का स्थित है और जन्म पत्रिका का लग्नेश चंद्र दसम स्थान में स्थित है।

लग्न पत्रिका का नवमेश नवांश पत्रिका में चतुर्थ भाव में मीन राशि का स्थित है तथा लग्नेश के साथ समसप्तक में है ।

यहां स्पष्ट होता है कि पिता का सहयोग तो मिलता रहेगा लेकिन जातिका पिता से दूर भी रह सकती है। पिता के स्वास्थ्य के लिए भी यह स्थिति अच्छी नहीं कहेंगे। सूर्य और नवमेश की अच्छी स्थिति पिता का समाज में एक मजबूत पक्ष प्रदर्शित करती है।

जातिक की पत्रिका में चतुर्थ भाव में तुला राशि स्थित है और राशि स्वामी नवम भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव पर सूर्य की दृष्टि है। चतुर्थ के स्थिर कारक एवं माता के कारक ग्रह चन्द्रमा नवम भाव में स्थित है। चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि भी है। यहां माता के साथ विषेष लगाव होगा लेकिन अपने मन की बात नहीं बता पाएंगी। माता जातिका के जीवन को हमेशा उज्ज्वल बनाने के लिए प्रयासरत रहेगी एवं समझाने–बुझाने का काम भी करती रहेगी ।

नवांश पत्रिका में चन्द्रमा नवम भाव में सिंह राशि का स्थित है। माता एक समझदार, पढ़ी–लिखी और प्रतिष्ठित महिला होगी और जीवन में तरक्की के पथ पर हमेशा अग्रसर रहेंगी।

जातिका को अपने बचपन से ही माता–पिता का सानिध्य एवं वात्सल्य प्राप्त रहा होगा। माता–पिता का सुख एवं सहयोग जातिका को हमेशा प्राप्त होगा। माता–पिता का आशीर्वाद सदा जातिका को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा।

पत्रिका में सूर्य और चन्द्रमा दोनों ही अच्छी स्थिति में है। माता को किसी गंभीर स्वास्थ्य की परेशानी नहीं होगी लेकिन पिता को स्वस्थ्य की परेशानी हो सकती है। माता–पिता दोनों अपने जीवन में प्रगतिशील रहेंगे। जातिका का माता–पिता के प्रति विशेष जुड़ाव है और हमेशा रहेगा।

भाई–बहनों के साथ जातिका का व्यवहार अच्छा होगा। जातिका सभी का सहयोग करेंगी। कभी–कभी थोड़ा मन–मुटाव हो सकता है लेकिन वो गंभीर रूप नहीं लेगा।

द्वादशांश –

वर्ग12 द्वादशांश (माता-पिता)

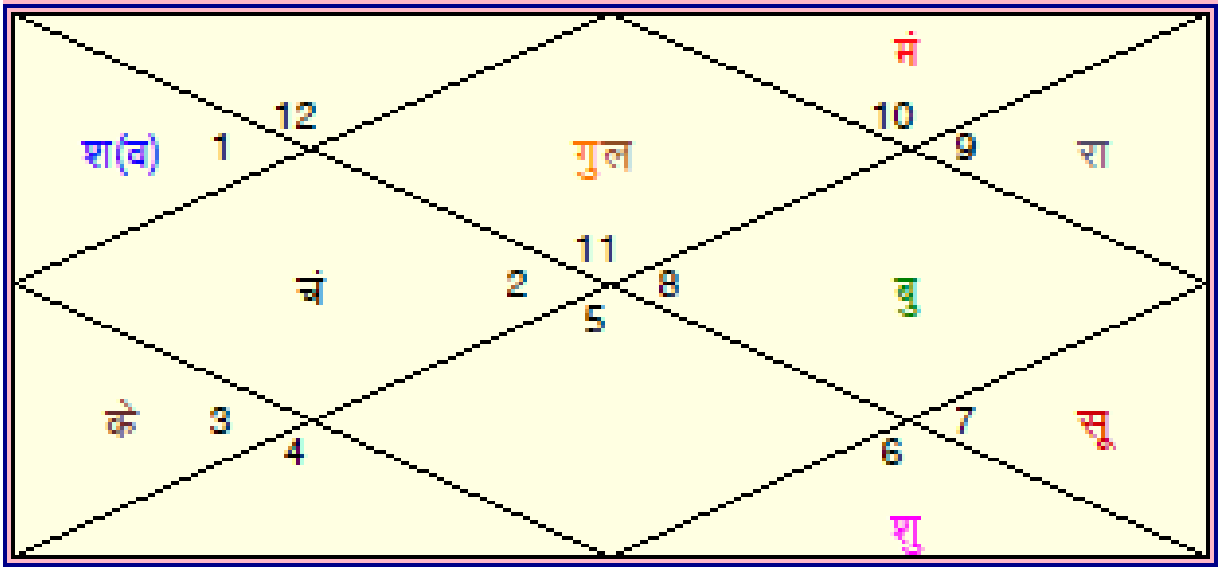

माता–पिता के लिए हम द्वादशांश को भी देखते है। डी –12 में लग्न में कुम्भ राशि स्थित है जो लग्न पत्रिका के अष्टम भाव की राशि है। और डी–12 का लग्नेश शनि तीसरे भाव में मेष राशि का स्थित है।

सूर्य नवम भाव में तुला राशि में स्थित है और सूर्य से नवम में मिथुन राशि में केतु स्थित है। चन्द्रमा चतुर्थ भाव में वृष राशि में स्थित है और चन्द्रमा से चतुर्थ में सिंह राशि स्थित है और सिंह का स्वामी सूर्य नवम भाव में तुला राशि का गया है।

यहाँ सूर्य और चन्द्रमा में से कोई भी 6/8/12 में नहीं है। चन्द्रमा की स्थिति को हम ज्यादा अच्छा कहेंगे। सूर्य से नवम में केतु पिता के स्वस्थ्य में पीड़ा दिखता है।

हम जातिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं सदा स्वस्थ एवं दीर्घायु हों ।

धन्यवाद!